Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष- 7
अंक- 31

मूल्य 600 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

05 मोहर्रम 1443 हिज्री कमरी, 21 सफ़र1401 हिज्री शम्सी, 04 अगस्त 2022 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

وَحَآجَّہٗ قَوۡمُہٗ ؕ قَالَ اَتُحَآجُّوۡٓنِّیۡ فِی اللّٰہِ وَقَدۡ هَدٰىنِ ؕ وَلَاۤ اَخَافُ مَا تُشۡرِکُوۡنَ بِہٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ یَّشَآءَ رَبِّیۡ شَیۡئًا

(सूरः ईनाम : 81)

अनुवाद : और उसकी कौम उससे झगड़ती रही। उसने कहा अल्लाह के बारे में मुझ से झगड़ते हो जबकि वह मुझे हिदायत दे चूका है और मैं उन चीज़ों से बिल्कुल नहीं डरता जिन्हें तुम उनका शरीक बना रहे हो।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

रिज़्क़ में वृद्धि और लम्बी आयु का नुस्ख़ा

(2067) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना जिसकी यह पसंद हो कि उसके रिज़्क़ में वृद्धि हो (और नेकियों का ज़्यादा से ज़्यादा उसे अवसर मिले और उसकी आयु लम्बी हो तो चाहिए कि वह सिला-ए-रहमी करे।

सिलसिले के माल से व्यापार

(2070) हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा हुए तो उन्होंने फ़रमाया मेरी क़ौम को इलम ही है कि मेरा पेशा ऐसा नहीं था कि जिससे मैं अपने घर वालों की ख़ुराक मुहय्या नहीं कर सकता। परन्तु अब मैं मुस्लमानों के काम में मशग़ूल हो गया हूँ। अतः अबू बकर के परिवार वाले अब बैतुल माल से खाएँगे और वह (अबू-बकर) मुस्लमानों के लिए इस माल में कारोबार करेगा (और व्यापार से उनका माल बढ़ाता रहेगा)

सहाबा अपना काम स्वयं करते थे

(2071) हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती थीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने काम स्वयं करते और उनसे पसीने की बू आती तो उनसे कहा गया अगर तुम नहा लिया करो तो अच्छा है।

(सही बुख़ारी, भाग 4 किताबुल बीयू, मुद्रित 2008 क़ादियान) ★ ★ ★

ख़ुदा ने तालीम दी है कि ज़बान को सँभाल कर रखा जाए और बेमानी, बेहूदा, बे- मौक़ा, ग़ैर ज़रूरी बातों से बचा जाए

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

जबकि इन सारी बातों से मालूम हो गया है कि सच्चे तक़्वा के बग़ैर कोई राहत और ख़ुशी मिल ही नहीं सकती तो मालूम करना चाहिए कि तक़्वा के बहुत से विभाग हैं जो अन्कबूत के तारों की तरह फैले हुए हैं। तक़्वा के समस्त मोती इन्सानी और अक़ायद ज़बान अख़्लाक़ इत्यादि से संलग्न हैं। नाज़ुक तरीन मामला भाषा से है। कभी कबार तक़्वा को दूर करके एक बात कहता है और दिल में ख़ुश हो जाता है कि मैंने यूं कहा और ऐसा कहा हालाँकि वह बात बुरी होती है। मुझे इस पर एक नक़ल याद आई है कि एक बुज़ुर्ग की किसी दुनियादार ने दाअवत की। जब वह बुज़ुर्ग खाना-खाने के लिए तशरीफ़ ले गए तो उस घमंडी दुनियादार ने अपने नौकर को कहा कि अमुक थाल लाना जो हम पहले हज में लाए थे और फिर कहा दूसरा थाल भी लाना जो दूसरे हज में लाए थे और फिर कहा कि तीसरे हज वाला भी लेते आना। उस बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि तू तो बहुत ही काबिल-ए-रहम है। इन तीन फ़िक्रों में तू ने अपने तीनों हिज्जों का सत्यानास कर दिया। तेरा मतलब इस बात से केवल यह था कि तू इस बात का इज़्हार करे कि तू ने तीन हज किए हैं। इस लिए ख़ुदा ने तालीम दी है कि ज़बान को सँभाल कर रखा जाए और बेमानी, बेहूदा, बे-मौक़ा, ग़ैर ज़रूरी बातों से एतराज़ किया जाए।(मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 381 मुद्रित 2018 क़ादियान)

★ ★ ★

तमाम इन्सानी रूहें चाहे उनके अजसाम किसी ज़माना में क्यों न दुनिया में रहे हों जमा किए जाएँगे और हर क़ौम का नबी सामने लाया जाएगा और अपनी क़ौम के विषय में गवाही देगा

यह जो फ़रमाया कि क़यामत के दिन अम्बिया बतौर गवाह खड़े किए जाएंगे मेरे नज़दीक अंबिया की शहादत से मुराद उनका उदाहरण है कि वे अपने उदाहरण पेश करेंगे

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत अल् नहल आयत : 85 وَیَوۡمَ نَبۡعَثُ مِنۡ کُلِّ اُمَّۃٍ شَہِیۡدًا ثُمَّ لَا یُؤۡذَنُ لِلَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا وَلَا ہُمۡ یُسۡتَعۡتَبُوۡنَ की तफ़सीर फ़रमाते हैं :

(तफ़सीर) इस बड़े अपराध के वर्णन के बाद फिर दुसरे जीवन का हवाला दिया कि इस दुनिया में तो इस जुर्म की सज़ा मिले गी ही परन्तु आख़रत में यह और भी ज़्यादा सज़ा पाएँगे और वह सज़ा और ज़िल्लत बहुत सख़्त होगी क्योंकि समस्त अर्वाह इन्सानी ख़्वाहाँ के अजसाम किसी ज़माना में क्यों नहीं दुनिया में रहे हों जमा किए जाएँगे और हर क़ौम का नबी सामने लाया जाएगा और अपनी क़ौम के विषय में गवाही देगा। फिर क्यों ये लोग इस अपमान का जो उस वक़्त उनको नसीब होगी ख़्याल नहीं करते। एक दूसरी जगह इस अपमान का निम्नलिखित शब्दों में वर्णन फ़रमाया है कि فَکَیۡفَ اِذَا جِئۡنَا مِنۡ کُلِّ اُمَّۃٍۭ بِشَہِیۡدٍ وَّجِئۡنَا بِکَ عَلٰی ہٰۤؤُلَآءِ شَہِیۡدًا ... یَوۡمَئِذٍ یَّوَدُّ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا وَعَصَوُا الرَّسُوۡلَ لَوۡ تُسَوّٰی بِہِمُ الۡاَرۡضُ (अल् निसा) अर्थात जब सब अक़्वाम और नबी जमा होंगे उस वक़्त उनको ऐसी नदामत होगी कि यह ख़्वाहिश करेंगे कि ज़मीन फट जाए और हम इस में दफ़न हो जाएं।

इस आयत से यह भी साबित होता है कि अल्लाह तआला ने हर क़ौम में नबी अवतरित फ़रमाए हैं। क़ुरआन-ए-करीम ने यह अक़ीदा मुख़्तलिफ़ आयात में वर्णन फ़रमाया है और इस में वे दूसरे सब मज़ाहिब से अलग है और यह इसकी सदाक़त के सबूतों में से एक ज़बरदस्त सबूत है।

यह जो फ़रमाया कि काफ़िरों को उस वक़्त इज़्न नहीं दिया जाएगा उसके अर्थ कुछ ने यह किए हैं कि उन्हें बोलने का इज़्न नहीं दिया जाएगा। यह अर्थ दुरुस्त नहीं क्योंकि क़ुरआन-ए-करीम की असंख्य आयात से साबित है कि कुफ़्फ़ार क़यामत पर अल्लाह तआला से कलाम करेंगा और अपने कारण भी पेश करेंगे। अतः इस لَا یُؤۡذَنُ से मुराद या तो जन्नत में दख़ूल की इजाज़त है और या उसके माने शफ़ाअत के हैं और मुराद यह है कि जब नबी हश्र के दिन आएँगे और उनको अपनी क़ौम के इन अफ़राद के हक़ में शफ़ाअत की इजाज़त दी जाएगी जो पूरी तरह कामिल न हुए थे परन्तु इसके काबिल थे कि नबी उन्हें अपना कह सकें उस वक़्त ये लोग शफ़ाअत से वंचित रह जाएंगे और उनके हक़ में शफ़ाअत की इजाज़त नहीं दी जाएगी। क़ुरआन-ए-करीम और हदीस से शफ़ाअत के मुताल्लिक़ साबित है कि इज़्न से होती है। क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है وَلَا تَنۡفَعُ الشَّفَاعَۃُ عِنۡدَہٗۤ اِلَّا لِمَنۡ اَذِنَ لَہٗ (रुकू : 3) अर्थात शफ़ाअत केवल उन्ही को फ़ायदा देगी जिनके हक़ में इज़्न इलाही होगा। सूरत यूनुस रुकू : 1, ताहा रुकू : 6 और अल् नजम रुकू : 2 में भी यह मज़मून वर्णन हुआ है और सूरः बक़रा रुकू : 34 में भी। हदीस में भी शफ़ाअत के विषय में इज़्न का शब्द आता है। मस्नद अहमद बिन हम्बल भाग 5 पृष्ठ 43 पर अबू बकर की रिवायत में है ثُمَّ یُؤۡذَنُ لِلۡمَلٰٓئِکَۃِ وَالنَّبِیّٖنَ وَ

शेष पृष्ठ 05 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह ने तुम्हारे लिए शेतानों के गिरोहों को जमा कर दिया है और जंग को समुंद्र में धकेल दिया है। वह पहले ख़ुश्की में तुम्हें अपने निशानात दिखा चुका हैता कि इन निशानात के ज़रीया समुंद्र में भी तुम सबक़ सीखो। अपने दुश्मन की तरफ़ चलो। समुंद्र को चीरते हुए उसकी तरफ़ बढ़ो क्योंकि अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे लिए इकट्ठा किया है

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बाबरकत समय में बाग़ी मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ होने वाली मुहिम्मात का वर्णन

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-ख़िलाफ़त में बागियों और मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ होने वाली नौवीं और दसवीं मुहिम का विस्तारपूर्वक वर्णन

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की तफ़सीर की रोशनी में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की हिज्रत के वक़्त समुंद्र फटने के चमत्कार के बारे में तफ़सील से वर्णन

बेहरीन और यमन के इलाक़ों में मुस्लमानों के लश्करों की बागियों और मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ हासिल होने वाली शानदार फ़ुतूहात का वर्णन

श्रीमान dicko ज़करीया साहिब शहीद और श्रीमान dicko मूसा साहिब शहीद आफ़ बुर्कीना फासो, श्रीमान मुहम्मद यूसुफ़ बलोच साहिब आफ़ बस्ती सादिक़ पूर (उम्र कोट), अज़ीज़ा मुबारज़ा फ़ारूक़ (वाकिफ-ए-नौ) रब्वाह और श्रीमान आनज़ोमाना वाता aanzumana ouattara) साहिब (मुअल्लिम सिलसिला एवरीकोस्ट का वर्णन और नमाज़ ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 01 जुलाई 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माना में मुर्तद होने वालों और बागियों के ख़िलाफ़ मुहिम्मात का वर्णन

हो रहा था, इस सिलसिला में नौवीं मुहिम का वर्णन था जो बेहरीन का था। इस विषय में मज़ीद तफ़सील यूं वर्णन की जाती है जो

हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु की हुतम पर फ़ौजकशी के बारे में है। लिखा है कि हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत जारूद रज़ियल्लाहु अन्हो को हुक्म भेजा कि तुम क़बीला अब्दुल कैस को लेकर हुतम के मुक़ाबले के लिए हिज्र से जुड़े इलाक़े में जा कर पड़ाव करो और हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी फ़ौज के साथ हुतम के मुक़ाबले पर उस इलाक़े में आए। दारीन वालों के इलावा तमाम मुशरेकीन हुतम के पास जमा हो गए। इस तरह तमाम मुस्लमान हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जमा हो गए। दोनों ने अपने अपने आगे ख़ंदक़ खोद ली। वे रोज़ाना अपनी ख़ंदक़ पार करके दुश्मन पर हमला करते और लड़ाई के बाद फिर ख़ंदक़ के पीछे हट आते। एक महीने तक जंग की यही कैफ़ीयत रही। इसी अस्ना में एक रात मुस्लमानों को दुश्मन के पड़ाव से ज़बरदस्त शोर-ओ-ग़ौग़ा सुनाई दिया। हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कोई है जो दुश्मन की असल हालत की ख़बर लाए? हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़्फ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा में इस काम के लिए जाता हूँ और उन्होंने वापस आकर यह इत्तिला दी कि हमारा हरीफ़ नशे में मदहोश है और नशे में धुत वोही तबाही बक रहा है। ये सारा शोर उसका है।

जब यह सुना तो मुस्लमानों ने फ़ौरन दुश्मन पर हमला कर दिया और उस के पड़ाव में घुस कर उनको बे दरेग़ मौत के घाट उतारना शुरू किया। वह अपनी ख़ंदक़ की तरफ़ भाग गए। कई इस में गिर कर हलाक हो गए, कई बच गए। कई ख़ौफ़ज़दा हो गए। कुछ क़तल कर दिए गए या गिरफ़्तार कर लिए गए। मुस्लमानों ने उनके पड़ाव की हर चीज़ पर क़बज़ा कर लिया। जो शख़्स बच कर भाग सका वह केवल उस चीज़ को ले जा सका जो उस के जिस्म पर थी। जबकि अब जान बचा कर भाग गया। हुतम की ख़ौफ़ और दहशत से यह कैफ़ीयत थी कि गोया उसके जिस्म में जान ही नहीं। वह अपने घोड़े की तरफ़ बढ़ा जबकि मुस्लमान मुशरेकीन के बीच में आ चुके थे। अपनी बदहवासी में हुतम ख़ुद मुस्लमानों में से फ़रार हो कर अपने घोड़े पर सवार होने के लिए जाने लगा। जैसे ही उसने रिकाब में पांव रखा रिकाब टूट गई। हज़रत केस बिन आसिम रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसका वध किया। मुशरेकीन की क़ियामगाह की हर चीज़ पर क़बज़ा करने के बाद मुस्लमान उनकी ख़ंदक़ से निकल कर उनके पीछे चले। हज़रत केस बिन आसिम रज़ियल्लाहु अन्हु अबजर के क़रीब पहुंच गए किन्तु अबजर का घोड़ा हज़रत केस रज़ियल्लाहु अन्हु के घोड़े से ज़्यादा ताक़तवर था। उनको यह संदेह हुआ कि यह कहीं मेरी गिरिफ़्त से निकल न जाए। उन्होंने अबजर के घोड़े की पीठ पर नेज़ा मारा जिससे घोड़ा ज़ख़मी हो गया। बहरहाल लिखा है कि अबजर भाग गया, उनके क़ाबू नहीं आया। एक रिवायत में है कि हज़रत केस बन आसिम रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबजर के सिर पर मार लगाई जो उसके कवच को चीरती हुई निकल गई। इस के बाद हज़रत केस रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुबारा ऐसा वार किया कि वह लहूलुहान हो गया।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 288-289 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

(अल्कामिल फ़ील तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 227 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2003 ई.)

(किताब रुद्दतुल लिल् वाक्दी पृष्ठ 163 दारुल गरब अल् इस्लामी 1990 ई.)

सुबह को हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु ने माल-ए-ग़नीमत मुजाहेदीन में तक़सीम कर दिया और ऐसे लोगों को जिन्हों ने खासतौर से जंग में बहादुरी दिखाई थी मरने वाले सरदारों के क़ीमती कपड़े भी दिए। उनमें हज़रत अफ़ीफ़ बिन मुन्ज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत केस बन आसिम रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत सुमामा बिन उसाल रज़ियल्लाहु अन्हु को कपड़े दिए गए । हज़रत सुमामा रज़ियल्लाहु अन्हु को जो कपड़े दिए गए उनमें हुतम का एक सियाह-रंग का क़ीमती मुनक़्क़श चोग़ा था जिसको पहन कर वे बड़े फ़ख़्र-ओ-ग़रूर से चला करता था।

(तिब्री भाग 2 पृष्ठ 289 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

इस मुहिम की कामयाबी की इत्तिला हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को दी

शेष पृष्ठ 7 पर

ताया ज़ाद भाई लड़की का वली बन सकता है इस शर्त के साथ कि उसके प्रथम असबी रिश्तेदारों में से कोई रिश्तेदार जीवित न हो

लजना की तर्बीयत इस तरह करें कि हयादार लिबास हो, बाहर निकलें तो उनका लिबास ऐसा न हो कि ग़लत किस्म के मर्दों की उस पर नज़रें पढ़ें

प्रत्येक लजना मैंबर रोज़ाना पाँच वक़्त नमाज़ें पढ़ने वाली हों, क़ुरआन-ए-करीम की रोज़ाना तिलावत करने वाली हों

नास्रात की तर्बीयत अच्छी तरह करें, उनको नमाज़ें पढ़ने की आदत पड़ जाए, उनको क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने की आदत पड़ जाए

उनको दुआएं करने की आदत पड़ जाए, उनको एम. टी. ए. पर जो ख़ुतबा आता है उसको सुनने की आदत पड़ जाए

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त18)

प्रश्न : एक महिलाएं ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में एक हदीस जिसमें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हिदायत फ़रमाई है कि "कोई व्यक्ति मौत की इच्छा न करे" की सेहत के बारे में दरयाफ़त किया तथा लिखा है कि यह हदीस हमारे जमाअती लिटरेचर में नहीं मिलती। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 4 अप्रैल 2019 ई. में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर प्रदान फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : आपने अपने पत्र में जिस हदीस का वर्णन किया है वह अहादीस की विभिन्न पुस्तकें में रिवायत हुई है। हज़रत इमाम बुख़ारी रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस हदीस को अपनी पुस्तकें में दर्ज किया है। और इस हदीस के शब्दों ये हैं

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَتَمَنَّيَنَّ أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ مِنْ ضُرٍّ أَصَابَهُ فَإِنْ كَانَ لَا بُدَّ فَاعِلًا فَلْيَقُلِ اللّٰهُمَّ أَحْيِنِي مَا كَانَتِ الْحَيَاةُ خَيْرًا لِي وَتَوَفَّنِي إِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِي۔

(सही बुख़ारी, किताब अल् मर्ज़ी, بَابُ تَمَنِّي الْمَرِيضِ الْمَوْتَ)

अर्थात् : हज़रत अंस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम में से कोई व्यक्ति किसी मुसीबत की वजह से जो उसे पहुंची हो, मौत की तमन्ना न करे। और यदि उसके लिए उसके सिवा कोई चारा न हो तो फिर वह यह कहे कि ए अल्लाह जब तक मेरा ज़िंदा रहना मेरे लिए बेहतर है, उस वक़्त तक मुझे ज़िंदा रख और जब मर जाना मेरे लिए बेहतर हो तो मुझे मृत्यु देदे।

जमाअती लिटरेचर में हज़रत-ए-सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सही बुख़ारी की जो शरह लिखी है इस में भी इस हदीस का वर्णन मौजूद है और मैंने भी 17 अगस्त 2012 ई. के ख़ुतबा जुमा में इस हदीस को वर्णन किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "कोई व्यक्ति मौत की इच्छा न करे।" क्योंकि यदि वह नेक है तो नेकियों में बढ़ेगा और अल्लाह तआला के फ़ज़लों का वारिस होगा और यदि बद है तो तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाएगी।

प्रश्न : निकाह के एक मामले में दुल्हन के पिता की वफ़ात की सूरत में दुल्हन की तरफ़ से उसके ताया ज़ाद भाई के वली निर्धारित होने पर विभाग रिश्ता नाता की तरफ़ से आरोप उठाने पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 14 जनवरी 2020 ई. में इस बारे में निमंलिखित हिदायत प्रदान फ़रमाई। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : आदरणीय अमीर साहब कैनेडा ने निकाह की रजिस्ट्रेशन का एक मामला मुझे भिजवाया है जिसमें लड़की के पिता फ़ौत हो चुके हैं और उसका कोई भाई भी नहीं है। और लड़की ने अपने निकाह के लिए अपने ताया ज़ाद भाई को वली निर्धारित किया है। लेकिन आपने यह कहते हुए कि ताया ज़ाद भाई वली निकाह नहीं हो सकता, इस निकाह की रजिस्ट्रेशन करने से इंकार कर दिया है।

मुझे बताएं कि आपने किस फ़िक़्ह के अनुसार ताया ज़ाद भाई के वली निकाह बनने पर इस निकाह की रजिस्ट्रेशन करने से मना किया है, जबकि इस बच्ची के न पिता ज़िंदा हैं और न कोई भाई है। फ़िक़्ह अहमदिया के अनुसार तो पिता के बाद बच्ची के असबी रिश्तेदारों में से जो क़रीबी रिश्तेदार मौजूद हो वह लड़की का वली बन सकता है और ताया ज़ाद भाई का शुमार असबी रिश्तेदारों में होता है और वह लड़की का वली बन सकता है इस शर्त के साथ कि इससे पहले असबी रिश्तेदारों में से कोई रिश्तेदार ज़िंदा न हो। इस लिए इस निकाह को रजिस्टर्ड कर लें।

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत-ए-अक़्दस में तहरीर किया कि यदि जन्नत और दोज़ख़ का ज़ाहिरी तसव्वुर दुरुस्त नहीं है तो फिर जन्नत और दोज़ख़ क्या है? और जब क़यामत आएगी तो जन्नत और दोज़ख़ कैसी लगेंगी? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने तिथि 4 फ़रवरी 2020 ई. में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर प्रदान फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : जन्नत और दोज़ख़ के बारे में जिस तरह दूसरे धर्मों में तरह-तरह के तसव्वुरात पाए जाते हैं मुसलमानों ने भी क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस में वर्णन जन्नत और दोज़ख़ के बारे में वर्णन उमूर को न समझने और उन्हें ज़ाहिर पर महमूल कर देने की वजह से ग़लत किस्म के ख़्यालात अपने ज़हनों में पैदा कर लिए हैं। हालाँकि क़ुरआन और हदीस ने इन्सान को समझाने के लिए जन्नत और दोज़ख़ के बारे में ये तमसीली नक़्शा वर्णन फ़रमाया है। और उनके बारे ये शब्दों बतौर इस्तेआरा इस्तिमाल फ़रमाए हैं और उनके पीछे एक और हकीक़त मख़फ़ी है। इसलिए क़ुरआन-ए-करीम ने इस तमसीली नक़्शा के साथ-साथ यह भी वर्णन फ़रमाया है

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ۔

(अल् सज्दः : 18) अर्थात् कोई व्यक्ति नहीं जानता कि इन के लिए उनके आमाल के बदला के तौर पर क्या-क्या आँखें ठंडी करने वाली चीज़ें छुपा कर रखी गई हैं।

इसी तरह हदीस में भी आया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत की नोमा ऐसी हैं

مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ۔

कि उन्हें न कभी किसी इन्सानी आँख ने देखा, न कभी किसी इन्सानी कान ने उनका हाल सुना और न कभी किसी इन्सान के दिल में उनके बारे में कोई तसव्वुर गुज़रा।

वास्तव में जन्नत और दोज़ख़ इसी दुनिया के ईमान और अमल का एक ज़ुल है वह कोई नई चीज़ नहीं जो बाहर से आकर इन्सान को मिलेगी बल्कि इन्सान की बहिश्त इन्सान के अंदर ही से निकलती है और इसी के ईमान और आमाल वर्षों से हैं जिनकी इसी दुनिया में लज़्ज़त शुरू हो जाती है और पोशीदा तौर पर ईमान और आमाल के बाग़ नज़र आते हैं। और नहरें भी दिखाई देती हैं। लेकिन आलिम आख़रत में यही बाग़ खुले तौर पर महसूस होंगे। इसी लिए क़ुरआन-

ए-करीम जन्नतियों के बारे में फ़रमाता है :

كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَ اُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا

(अल् बकरः : 26) कि जब भी वह उन (बाग़ात) में से कोई फल बतौर रिज़्क़ दिए जाऐंगे तो वह कहेंगे यह तो वही है जो हमें पहले भी दिया जा चुका है। हालाँकि इस से पहले उनके पास केवल इस से मिलता-जुलता (रिज़्क़) लाया गया था।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जन्नत और दोज़ख़ की वास्तविकता वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं : "क़ुरआन शरीफ़ की दृष्टि से दोज़ख़ और बहिश्त दोनों असल में इन्सान की ज़िंदगी के अज़्लाल और आसार हैं। कोई ऐसी नई जस्मानी चीज़ नहीं है कि जो दूसरी जगह से आए। यह सच्च है कि वे दोनों जस्मानी तौर से मुतमस्सिल होंगे परन्तु वे असल अध्यात्मिक हालतों के अज़्लाल-ओ-आसार होंगे। हम लोग ऐसी बहिश्त के क़ायल नहीं कि केवल जस्मानी तौर पर एक ज़मीन पर दरख़्त लगाए गए हों और न ऐसी दोज़ख़ के हम क़ायल हैं जिसमें वास्तव में गंधक के पत्थर हैं बल्कि इस्लामी अक़ीदा के अनुसार बहिश्त दोज़ख़ इन्ही आमाल के प्रतिबिंब हैं जो दुनिया में इन्सान करता है।"

(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी, रोहानी ख़ज़ायन, भाग 10 पृष्ठ 413)

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में अपने बेटे की बीमारी का वर्णन करके लिखा है कि जब सब कुछ ख़ुदा तआला के हाथ में है तो वह मेरे बेटे को ठीक क्यों नहीं कर देता। यदि कहा जाए कि इन्सान को इसके आमाल की सज़ा मिलती है। तो मेरा बेटा तो पैदा ही ऐसा हुआ था, उसने कौन सा गुनाह किया है? यह सब मेरी समझ से बाहर है। मुझे ये सब समझाएँ। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 4 फ़रवरी 2020 ई. में इस प्रश्न का निमंलिखित उत्तर प्रदान फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : ख़ुदा तआला जो कामिल इलम वाली हस्ती है, इसके मुक़ाबले पर इन्सान का इलम बहुत ही नाक़िस और ना-मुकम्मल है। इसलिए इन्सान के लिए ख़ुदा तआला के प्रत्येक फ़ेअल की हिक्मत समझना असम्भव है। इस लिए इन्सान को अल्लाह तआला की ज़ात के बारे में ऐसा आरोप करना ज़ेब नहीं देता। इससे उसके एहसानात की नाशुक्री का इज़हार होता है। क्योंकि जो नेअमतें अल्लाह तआला ने इन्सान को प्रदान फ़रमाई हैं वे अनगिनत हैं और यदि उनका इन्सान शुक्र अदा करना चाहे तो ससंभव है। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इन्सान के जिस्म के प्रत्येक जोड़ पर हर-रोज़ एक सदका वाजिब होता है। क्योंकि यदि ये जोड़ न हों तो इस का सारा जिस्म बेकार हो जाए। फिर एक और नसीहत हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें यह फ़रमाई कि तुम में से कोई जब ऐसे व्यक्ति को देखे जो माल या जस्मानी साख़्त में उस से बेहतर है तो उसे उस व्यक्ति पर भी नज़र डालनी चाहिए जो माली लिहाज़ से या जस्मानी लिहाज़ से उससे कमज़ोर है। इन नसाएह पर अमल करने से इन्सान के दिल में अल्लाह तआला के एहसानों का वास्तविक शुक्र पैदा होता है।

दूसरी बात यह है कि अल्लाह तआला के इन कामों में भी इन्सान की ही तरक़्क़ी के बहुत से राज़ गुप्त किए हैं। यदि यह दुख, तकालीफ़ और बीमारियां न होतीं तो इन्सान में सोचने और तरक़्क़ी करने की तहरीक ही पैदा न होती और वे एक पत्थर की तरह जामिद चीज़ बिन कर रह जाता। यह तकालीफ़ ही हैं जो इन्सान में तहक़ीक़ और जुस्तजू के माद्दा को मुतहर्रिक रखती हैं। इसलिए अक्सर विज्ञानिक तहक़ीक़ात और ईजादात के पीछे इन्सानी तकालीफ़ और बेआरामी से छुटकारा पाने की एक मुस्तक़िल जद्द-ओ-जहद कारफ़रमा नज़र आती है।

तीसरी बात यह है कि जो कष्ट इन्सान को पहुँचते हैं वे इन्सान के अपने आमाल का परिणाम हैं। अल्लाह तआला ने दुनिया के निज़ाम को चलाने के लिए एक क़ानून-ए-क़ुदरत बनाया और दुनिया में बहुत सी चीज़ें पैदा करके इन्सान को उन पर हाकिम बना दिया है। अब यदि इन्सान कुछ चीज़ों से फ़ायदा न उठाए या उन चीज़ों का ग़लत इस्तिमाल करके नुक़्सान उठाए तो यह उसका अपना क़सूर है। इसलिए मैडीकल विज्ञान से साबित है कि माँ बाप की कुछ कमज़ोरियों का उनकी औलाद पर-असर पड़ता है। हमल में यदि पूरी तरह सावधानी न बरती जाए तो कभी कबार उसका पैदा होने वाले बच्ची की सेहत पर बुरा असर पड़ता है, जो माएं डाइटिंग करती हैं उनके बच्चे कभी कबार कमज़ोर पैदा होते हैं, जिन बच्चियों को बचपन में मिट्टी चाटने की आदत हो कभी कबार उनकी औलाद माज़ूर पैदा होती है। अतः तकालीफ़ ख़ुदा तआला की पैदा-कर्दा नहीं हैं बल्कि इस क़ानून-ए-क़ुदरत के ग़लत इस्तेमाल या इस में कमी बेशी करने के सबब से हैं जो इन्सानों के फ़ायदा के लिए बनाया गया था। जबकि अल्लाह तआला इन्सान की बहुत सी ग़लतियों से दरगुज़र फ़रमाते हुए उसे उनके बुरे परिणाम से बचाता रहता है। इस मज़मून को अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में इस तरह वर्णन फ़रमाया है कि "और तुम्हें जो मुसीबत पहुँचती है तो वह इस कारण से है जो तुम्हारे अपने हाथों ने कमाया। जबकि वह बहुत सी बातों से दरगुज़र करता है।" (सूरः शूरा : 31)

फिर ख़ुदा तआला के बनाए हुए क़ानून-ए-क़ुदरत में एक बात यह भी शामिल है कि प्रत्येक चीज़ दूसरे से असर क़बूल करती है। इसी क़ानून के तहत बच्चे अपने माता पिता से जहां अच्छी बातें क़बूल करते हैं वहां बुरी बातें भी क़बूल करते हैं, सेहत भी उनसे लेते हैं और बीमारी भी उनसे लेते हैं। यदि बीमारियां या तकालीफ़ उनको माँ बाप से विरसा में नहीं मिलतीं तो अच्छी बातें भी नहीं मिलतीं। और यदि ऐसा होता तो इन्सान एक पत्थर का वजूद होता जो बुरे भले किसी असर को क़बूल नहीं करता और इस तरह इन्सानी जन्म का उद्देश्य झूठा हो जाता और इन्सान की ज़िंदगी जानवरों से भी बदतर हो जाती।

चौथी बात यह है कि दुनयावी ज़िंदगी वास्तव में आरिज़ी ज़िंदगी है और उसकी तकालीफ़ भी आरिज़ी हैं। और जिन लोगों को इस आरिज़ी ज़िंदगी में कोई तकलीफ़ पहुँचती है अल्लाह तआला इसके बदले में ऐसे व्यक्ति की उख़रवी ज़िंदगी जो वास्तव में दाइमी ज़िंदगी है, की तकालीफ़ दूर फ़र्मा देता है। इसलिए अहादीस में आता है कि एक मोमिन को दुनिया में रस्ता चलते हुए जो कांटा भी चुभता है इसके बदले में भी अल्लाह तआला उसके नामा-ए-आमाल में अज्र लिखता है या उसकी ख़ताएँ माफ़ कर देता है।

इस दुनयावी ज़िंदगी के मसायब में अल्लाह तआला अपने प्यारों को सबसे अधिक डालता है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि लोगों में से अम्बिया पर सबसे अधिक आज़माईशें आती हैं फिर रुतबे के अनुसार दर्जा बदरजा बाक़ी लोगों पर आज़माईश आती है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने किसी आदमी को हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अधिक दर्द में मुबतला नहीं देखा। इसलिए हम जानते कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कई बच्चे फ़ौत हुए, हालाँकि केवल एक बच्चा की वफ़ात का दुख ही बहुत बड़ा दुख होता है।

अतः दुनयावी तकालीफ़ और आज़माईशों में बहुत सी इलाही हिकमतें गुप्त होती हैं, जिन तक कभी कबार इन्सानी अक़्ल की रसाई सम्भव नहीं होती। अतः इन्सान को सब्र और दुआ के साथ उनको बर्दाश्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "कई बार मस्लेहत इलाही यही होती है कि दुनिया में इन्सान की कोई मुराद हासिल नहीं होती। तरह-तरह के आफ़ात, बलाऐं, बीमारियां और नामुरादियां लाहक़ होती हैं परन्तु उनसे घबराना नहीं चाहिए।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 23 ऐडीशन 2016 ई.)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ नैशनल आमला लजना इमाइल्लाह बंगलादेश की virtual मुलाक़ात तिथि 14 नवंबर 2020 ई. में लजना और नास्रात की तर्बीयत के बारे में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया लजना की तर्बीयत इस तरह करें कि लजना को आदत डालें कि एक तो उनका बाक़ायदा हयादार लिबास हो, वे पर्दा करती हों और घर से बाहर निकलें तो उनका लिबास ऐसा न हो कि ग़लत किस्म के मर्दों की उस पर नज़रें पढ़ें, और पर्दा करके बाहर निकला करें। इस बात का ख़्याल रखें कि अहमदी लड़की और अहमदी महिलाओं का दूसरों से एक फ़र्क़ होना चाहिए और आदत डालें के प्रत्येक लजना मैंबर जो है वह रोज़ाना पाँच वक़्त नमाज़ें पढ़ने वाली हो। यह कोशिश करें कि प्रत्येक लजना मैंबर जो है वह क़ुरआन-ए-करीम की रोज़ाना तिलावत करने वाली हो। और यह भी कोशिश करें कि आपकी जो नौजवान लड़कियां हैं उनको अपने अहमदियों में ही रिश्ते करने की तरफ़ अधिक तवज्जा हो बजाय इसके कि बाहर रिश्ते करें। और जो नौजवान लड़कियां काम करती हैं या जो महिलाएं काम करती हैं उनको यह आदत डालें कि वह अपने काम की जगह पर अपना ऐसा लिबास पहनें जो हयादार लिबास हो और पर्दा में रह कर

काम किया करें। इसी तरह तर्बीयत के सैमीनार भी किया करें और उन सैमीनार में नौजवानों को बुलाया करें और उनको समझाया करें कि अल्लाह और रसूल का क्या आदेश हैं और उसके अनुसार अपनी तर्बीयत करें।

इसी मुलाक़ात में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नास्रात की तर्बीयत के महत्त्व पर भी रोशनी डालते हुए फ़रमाया : उनके लिए तर्बीयत के प्रोग्राम ऐसे बनाएँ कि नास्रात की तर्बीयत अच्छी तरह कर दें, उनको नमाज़ें पढ़ने की आदत पड़ जाए, उनको क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने की आदत पड़ जाए, उनको दुआएं करने की आदत पड़ जाए, उनको मेरा एम. टी. ए. पर जो ख़ुतबा आता है उसको सुनने की आदत पड़ जाए, नास्रात की यदि अच्छी तरह तर्बीयत कर देंगी तो वही नास्रात लजना में जा के फिर अधिक अच्छा काम करेंगी। यदि नास्रात की आप ट्रेनिंग कर देंगी तो इन शा अल्लाह तआला आपकी लजना भी बड़ी अच्छी हो जाएगी। इसलिए कोशिश करें कि नास्रात की अधिक से अधिक अच्छी तर्बीयत कर सकें।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक मैंबर लजना इमाइल्लाह ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि आप अत्यधिक व्यस्त रहते हैं क्या आपकी हफ़्ता-वार छुट्टी का कोई इंतिज़ाम है और आप अपने दोस्तों और परिजनों के लिए किस तरह वक़्त निकालते हैं? इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाया:

उत्तर : बस इसी तरह गुज़ार लेते हैं। इस वक़्त भी मैं आपके साथ मीटिंग करके हफ़्ता-वार छुट्टी मना रहा हूँ। यह मेरी हफ़्ता-वार छुट्टी है।

प्रश्न : एक मेम्बर लजना ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि हुज़ूर जब ख़िलाफ़त से पहले अफ़्रीक़ा तशरीफ़ ले गए तब के हालात अब जैसे नहीं थे। इस वक़्त काम करते हुए काफ़ी मुश्किलात का सामना करना पड़ा होगा। हुज़ूर से दरख़ास्त है कि इस वक़्त का कोई अनुभव हमें बताएं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न का निम्नलिखित शब्दों में उत्तर प्रदान फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : बात यह है कि मुश्किलात का सामना तो करना पड़ता है। और इस वक़्त बड़े मुश्किल हालात थे, अब तो बड़े अच्छे हालात हैं। तो यही था कि जिस काम के लिए हम आए हैं इस काम को करना है और इस उद्देश्य को पूरा करना है। मुश्किलात तो काम के रस्ते में सामने आती हैं लेकिन दीन के काम में मुश्किलात रोक नहीं बनने चाहिऐं। इसलिए हमारी, मेरी भी और मेरी पत्नी की भी इस वक़्त यही कोशिश होती थी कि हमारे जो काम हैं वह चलते रहें और कोई रोक न हमें बने। और ऐसे हालात में, मुश्किल हालात में महिलाओं को भी खाविंदों का साथ देना चाहिए और खाविंदों को भी महिलाओं का ख़्याल रखना चाहिए। और जो दीनी काम हैं वह चलते रहने चाहिऐं। बाक़ी अल्लाह तआला पर तवक्कुल करते हुए जब आप काम करते हैं तो चाहे मुश्किल हालात भी हों अल्लाह तआला उनके हल का कोई न कोई माध्यम निकाल देता है। और इसी तरह काम करने के साथ-साथ दुआ भी करते रहना चाहिए तो अल्लाह तआला इस में बरकत भी डाल देता है। बस यही था कि मेहनत करो और दुआ करो तो अल्लाह तआला हल कर देता है। किसी बात से घबराना नहीं चाहिए।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर लंदन)

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्-फ़ज़्ल इंटरनैशनल 16 जुलाई 2021)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमअत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्-फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्यात्म्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमअत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

पृष्ठ 01 का शेष

الشُّهَدَاءِ اَنْ يَّشْفَعُوْا۔ अर्थात फिर फ़रिश्तों, नबियों और शुहदा को अल्लाह तआला इजाज़त देगा कि वे शफ़ाअत करें।

क़ुरआन-ए-करीम में एक और मफ़हूम भी इस इज़्न का वर्णन हुआ है। सूरतअल् मुर्सेलात में है وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ अर्थात कुफ़्फ़ार को ऐसी इजाज़त न दी जाएगी कि वह उज़्र पेश कर सकें अर्थात ऐसी कोई इजाज़त उन्हें नहीं मिलेगी कि इस से फ़ायदा उठा कर वे कोई माक़ूल उज़्र पेश कर सकें।

यह जो फ़रमाया कि क़यामत के दिन अम्बिया बतौर गवाह खड़े किए जाऐंगे मेरे नज़दीक अंबिया की शहादत से मुराद उनका नमूना है कि वह अपने नमूने को पेश करेंगा कि कलाम-ए-इलाही ने हम पर यह असर किया है। इस तालीम को मानने का यह नतीजा हुआ कि हमें ख़ुदा मिल गया और हम कहाँ से कहाँ पहुंच गए। इस तरह पर ख़ुदा तआला उस वक़्त काफ़िरों को शर्मिंदा करेगा कि देखो हमारे कलाम का एजाज़ जिससे रुहानी क़ुव्वतें हासिल करके हमारा यह नबी इस कमाल तक पहुंच गया और तुम इस कलाम का इन्कार कर के कहाँ से कहाँ जा गिरे।

हर नबी कलाम-ए-इलाही के नतीजे का अमली नमूना होता है यही वजह है कि कलाम बग़ैर नबी के नहीं आता। नबी से कलाम की शान का पता लगता है और कलाम से नबी की शान का।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 214 मुद्रित 2010 क़ादियान)

★ ★ ★

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं" (ख़ुत्बा जुमअः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की जर्मन यात्रा जून 2014 ई. (भाग-2)

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

इन्फ़िरादी और फ़ैमिली मुलाक़ातें

आज पिछले-पहर प्रोग्राम के अनुसार मुलाक़ातें थीं। छः बजकर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारेऔर फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं।

आज 38 फ़ैमलीज़ के 129 लोग और 46 लोग ने इन्फेरादी तौर पर अर्थात कुल 177 लोग ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया और प्रत्येक ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य भी पाई।

मुलाक़ात का सौभाग्य पाने वालों में Frankfurt की जमाअत के अतिरिक्त जर्मनी की अन्य 49 जमाअतों और क्षेत्रों से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ शामिल थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अज़ राहे शफ़क़त मुलाक़ात के समय शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों और बच्चियों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाएं। कितने ही ख़ुशनसीब ये बच्चे और बच्चियां हैं जिन्होंने अपने आक़ा के साथ ये कुछ बाबरकत के क्षण गुज़ारे और फिर हुज़ूर अनवर के दस्त-ए-मुबारक से ये भेंटें प्राप्त कीं जो उनकी जीवन के लिए एक यादगार बन गए। और अपने आक़ा के साथ जो तसावीर उन्हों ने बनवाईं वह तस्वीरें और अपने आक़ा के क़ुरब में ये कुछ घड़ियाँ इन ख़ानदानों की सारी जीवन का सरमाया हैं। न केवल उनके लिए बल्कि उनकी आइन्दा आने वाली नसलें भी इन मुबारक क्षण की क़दर करेंगी और उनको सँभाल कर रखेंगी और क़दर की निगाह से देखेंगी। अल्लाह ये सआदतें उनके लिए मुबारक फ़रमाए। मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम सवा नौ बजे तक जारी रहा।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अज़ राहे शफ़क़त प्रिय मुस्तंसिर अहमद तालिब-ए-इलम दर्जा शाहिद जामिया अहमदिया यू. के की समारोह वलीमा में शमूलियत के लिए तशरीफ़ ले आए। इस समारोह का एहतिमाम "बैयतुल सबूह" के एक हाल में किया गया था।

इसके बाद पौने दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

7 जून 2014 ई. शनिवार के दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह चार बजकर बीस मिनट पर पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक देखी। विभिन्न देशों और जमाअतों से आने वाले ख़ुतूत, रिपोर्टस और फैक्सज़ और मामलेत मुलाहिज़ा फ़रमाने के बाद प्रत्येक ख़त पर अपने दस्त-ए-मुबारक के साथ हिदायात तहरीर फ़रमाएं और इर्शादात से नवाज़ा।

यहां प्रतिदिन क़ादियान, रब्वाह और लंदन केंद्र से आने वाली डाक प्राप्त होती है और संसार के कुछ देशों से सीधा भी डाक आती है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ प्रतिदिन साथ के साथ ये सारी डाक मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं और हिदायात से हैं।

इन्फ़िरादी फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार मध्याह्न एक बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज के इस सैशन में दस फ़ैमिलीज़ के 31 लोग और 48 लोगों ने इन्फ़िरादी तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

इन सभी फ़ैमिलीज़ और लोगों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीरें खिचवाई और तहायफ़ भी प्राप्त किए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अज़-राहे शफ़क़त शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटे बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए। मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम सवा दो बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

आज प्रोग्राम के अनुसार जर्मनी के शहर Friedberg में "मस्जिद दारुल अमान" के उद्घाटन का समारोह था।

पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह से बाहर पधारे और इजतिमाई दुआ करवाई और क़ाफ़ला बैयतुल सबूह से Friedberg के लिए रवाना हुआ।

फ़रीद बर्ग की यहां से दूरी 19 किलोमीटर है। लगभग बीस मिनट की यात्रा के बाद पाँच बजकर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की Friedberg तशरीफ़ आवरी हुई।

स्थानिय जमाअत के लोग पुरुष और महिलाओं, बच्चे, बच्चियां कई दिनों से हुज़ूर अनवर की बाबरकत आमद पर तैयारियों में व्यस्त थे और इस जगह को बड़ी सुन्दरता से सजाया गया था। उनके लिए आज का दिन ईद से कम न था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के मुबारक क़दम उनकी सरज़मीन पर दुसरी दफ़ा पड़ रहे थे। इस से पूर्व 29 मई 2012 ई. को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने यहां पधार कर "मस्जिद दारुल अमान" का नींव का पत्थर रखा था और आज ईसी मस्जिद का उद्घाटन होना था। प्रत्येक बेहद ख़ुश था। जूंही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की गाड़ी उस जगह पहुंची तो जमाअत के लोग ने पुरजोश ढंग में नारे बुलंद किए और बच्चों और बच्चियों ने समूहों की सूरत में दुआइया नज़्में और स्वागतम के गीत प्रस्तुत किए और अपने आक़ा को दिल की गहराईयों से अहलन व्सहलन व् मर्हबा कहते हुए स्वागतम कहा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर पधारे तो लोकल सदर जमाअत डाक्टर वहीद अहमद साहब, रीजनल अमीर मुज़फ़्फ़र अहमद ज़फ़र साहब और हैदर अली ज़फ़र साहब मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को स्वागतम कहते हुए हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इस अवसर पर Mr. Peter Ziebarth (जो कौंसिलर हैं और मेयर के प्रतिनिधिके तौर पर आए थे), Mr. Joachim Arnold (काओनटी कमिशनर), Mr. Jörg Uwe Hahn (भूतपूर्व वज़ीर इन्साफ़) और मेंबर ज़िला असैंबली Mr. Tobias Utter और मेंबर ज़िला असैंबली Mr. Corrado Di Benedetto ने भी हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

मस्जिद दारुल अमान का उद्घाटन

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बाहरी हिस्सा में लगी हुई तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई और दुआ करवाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के अंदर तशरीफ़ ले आए और नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई जिसके साथ ही मस्जिद का उद्घाटन हुआ।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बाहरी सेहन में अख़रोट का पौधा लगाया। इसके बाद प्रतिनिधि मेयर Ziebarth साहब और ज़िलई ऐडमिनिस्ट्रेटर Joachim Arnold साहब ने भी मुशतर्का तौर पर अख़रोट का एक पौधा लगाया।

मस्जिद दारुल अमान फ़रीद बर्ग के उद्घाटन के अवसर पर आयोजित समारोह

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मारकी मे तशरीफ़ ले आए जहां आज का इस उद्घाटन समारोह में शामिल होने वाले मेहमान पहले से ही अपनी अपनी नशिस्तों पर थे।

शामिल होने वाले जर्मन मेहमानों की संख्या 166 थी। जिनमें दो सदस्य ज़िला

असैंबली, तीन मेयर साहबान और काओनटी कमिशनर, 16 सयासी व्यक्तियात, 13 कल्चर तन्ज़ीमों के प्रतिनिधि, 17 प्रोफ़ैसर्ज़ साहबान और अध्यापक और एक चर्च के पादरी भी शामिल थे। इसके अतिरिक्त डाक्टरज़, वुकला, पुलिस और जीवन के विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले मेहमान शामिल थे

इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में T.V HR के प्रतिनिधि और अख़बारात FAZ" "Neue Presse" और Wetterauer Zeitung" के प्रतिनिधि और जर्नलिस्ट शामिल थे।

समारोह का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो प्रिय मरवान गुल तालिब-ए-इलम जामिया अहमदिया यू.के ने प्रस्तुत की। इसके बाद उसका जर्मन अनुवाद डाक्टर मिर्ज़ा नोमान अहमद और उर्दू अनुवाद आसिम राशिद काहलों साहब ने किया।

अमीर साहब जर्मनी का परिचयात्मक भाषण

अमीर साहब जर्मनी ने अपने ऐड्रैस में इस क्षेत्र का परिचय करवाते हुए बताया।

शहर Friedberg जो सात क़स्बात पर आधारित है। फ्रांकफ़ुर्ट से 30 किलोमीटर दूर, जर्मनी के सूबा Hessen में स्थित है। इस की जनसंख्या तीस हज़ार नफ़ूस पर आधारित है।

इस शहर को रोमन एम्पायर के ज़माने से फ़ौजी तौर पर एहमीयत प्राप्त रही है। शहर में स्थित पहाड़ी पर जो क़िला बनाया गया इस में रोमन मिल्ट्री कैंप क़ायम किया गया।

क़ुरून-ए-वुसता में इस शहर का क्षेत्र व्यापर के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण था। आज भी ये शहर ज़िला Wetterau का समाजी केंद्र है Adolf Tower जिसकी ऊंचाई 58 मीटर है इस शहर का संबल (Symbol) है।

जमाअत फ़रीद बर्ग (Friedberg) का क़ियाम 1990 ई. में अनुकरण में आया और इसके पहले सदर आदरणीय मिर्ज़ा नईम अहमद साहब निर्धारित हुए। साल 2006 ई. में जब जर्मनी में लोकल इमारतों का निज़ाम क़ायम किया गया तो डाक्टर वहीद अहमद साहब उसके पहले लोकल अमीर निर्धारित हुए। साल 2010 ई. में लोकल इमारत ख़त्म करके अलग-अलग जमाअतें बना दी गईं और आजकल डाक्टर वहीद अहमद साहब जमाअत फ़रीद बर्ग के सदर हैं। यह जमाअत उस समय तीन सदस्य से अधिक लोग पर आधारित है। हमारे विद्यार्थी-ए-यूनीवर्सिटीज़ में पढ़ रहे हैं और कुछ Ph.D. भी हैं।

इस क्षेत्र में मस्जिद के लिए प्लाट मिलना पर्याप्त मुश्किल था बल्कि मस्जिद बनने की आज्ञा मिलनी भी अत्यधिक मुश्किल थी। हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ के लिए निरन्तर पत्र लिखे गए और अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल फ़रमाया। जमाअत के कौंसल से सम्पर्क करने पर पता लगा कि रिहायशी और सनअती क्षेत्रों में प्लाट निसबतन सस्ते मिलते हैं। इस लिए इस ओर भरपूर ध्यान दिया गया और कौंसल से सदैव सम्पर्क रहा। आख़िर कार 2009 ई. में एक प्लाट 2000 मुरब्बा मीटर का मिला और साथ मस्जिद की आज्ञा भी मिली। इस क्षेत्र के मेयर Michael Keller ने जमाअत की बहुत सहायता की। इस लिए यह प्लाट 13 अक्तूबर 2011 ई. को दो लाख साठ हज़ार यूरो में ख़रीदा गया और 29 मई 2012 ई. को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने यहां पधार कर इस मस्जिददार अमान का नींव का पत्थर रखा और आज उसका उद्घाटन हुज़ूर अनवर फ़र्मा रहे हैं।

मस्जिद के हाल को दो हिस्सों में तक़सीम करके मर्दों और महिलाओं के लिए अलग-अलग जगह बनाई गई है। इसके अतिरिक्त दफ़ातिर भी उपस्थित हैं, किचन भी है। मस्जिद के गुम्बद का क़तर पाँच मीटर और मीनारा की ऊंचाई नौ मीटर है। अठारह गाड़ियों की पार्किंग की जगह है।

समारोह में शामिल कुछ सम्मानीय मेहमानों के ऐड्रैसिज़

इसके बाद कौंसल मेंबर Mr. Peter Ziebarth ने अपना ऐड्रैस प्रस्तुत करते हुए कहा।

मुझे आज मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर बुलाया गया है। मैं बहुत ख़ुशी से आज के इस समारोह में शामिल हूँ। शहर की पार्लियामेंट के मेंबर के तौर पर और शहर की इंतिज़ामेंया की ओर से हाज़िर हूँ और सब शहर के लोगों की नुमाइंदगी कर रही हूँ। फ़रीद बर्ग ऐसा शहर है जहां सब धर्मों के लोग आबाद हैं। जिन लोगों ने यह मस्जिद बनाई है वह फ़रीद बर्ग को अपना घर समझते हैं और यह एक सफ़ल इंटीग्रेशन की ज़मानत है। इंटीग्रेशन का उद्देश्य यह नहीं कि हम केवल अपनी सक़ाफ़्त को क़ायम रखें बल्कि इस का अर्थ यह है कि हम इस जगह को अपना घर समझें। आज मस्जिद दारुल अमान से इसी बात का प्रकटन हो रहा है और हमें इस बात से बहुत ख़ुशी है। मैं जमाअत अहमदिया को इस की मुबारकबाद देता हूँ तथा मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला इस मस्जिद पर और इस में इबादत करने वालों पर अपनी हिफ़ाज़त के पर रखे।

इसके बाद Mr. Joachim Arnold डिस्ट्रिक्ट ऐडमिनिस्ट्रेटर और कमिशनर आफ़ काओनटी ने अपना ऐड्रैस प्रस्तुत करते कहा :

मैं आज इस पूरे ज़िला की ओर से आप को नई मस्जिद के उद्घाटन पर मुबारकबाद प्रस्तुत करता हूँ। अल्लाह तआला उन लोगों की हिफ़ाज़त फ़रमाए जो इस मस्जिद में दाख़िल होंगे और ख़ुदा की इबादत करेंगे। हमारा ज़िला Wetterau एक बैनुल अक़वामी क्षेत्र है जहां 25 हज़ार ग़ैर मुल्की रहते हैं। हम उन लोगों को क़दर की निगाह से देखते हैं। इस जगह 119 अक़्वाम के लोग रहते हैं। प्रत्येक चाहता है कि इस माहौल में घुल मिल जाएं। मुख़्तलिफ़ स्वभाव और सोच के लोग हैं कुछ धर्म के साथ सम्बन्ध रखने का प्रयास करते हैं और कुछ के दूसरे हैं। परन्तु प्रत्येक को यहां रहने और आज़ादी से अपनी राय के प्रकटन का हक़ है। यह जनतंत्र का उसूल है। हमने अपनी ग़लतियों से सीखा है जो हमने उदाहरण के तौर पर Nazi के दौर में की थीं।

सहिष्णुता हमारे लिए बहुत एहमीयत रखती है। सहिष्णुता के लिए ख़तरा चरमपंथी और कट्टरपंथी लोगों से होता है जो धार्मिक भी होते हैं और सयासी भी होते हैं।

मैं 25 वर्षों से इस बात पर गवाह हूँ कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत हमेशा सहिष्णुता का पास रखती है और समाज में अपना आचरण अदा करती है। आपकी मस्जिद इस बात की निशानी है कि यहां धार्मिक सहिष्णुता है और एक दूसरे से सहिष्णुता के साथ रह सकते हैं। इस लिए मैं ख़ुदा की बरकत इस मस्जिद में चाहता हूँ।

इसके बाद भूतपूर्व वज़ीर इन्साफ़ Mr. Jörg Uwe Hahn ने अपना ऐड्रैस प्रस्तुत किया।

उन्होंने कहा सम्माननीय ख़लीफतुल मसीह आज इस महत्वपूर्ण समारोह में शामिल हो कर मैं बहुत ख़ुश हूँ। जब हम एक जगह पर रहना चाहते हैं तो अपना घर बनाते हैं और जब सदैव रहना चाहते हैं तो ख़ुदा का घर बनाते हैं। मेरे लिए यह बड़ा महत्वपूर्ण दिन है कि आज मैं ख़ुदा के घरके उद्घाटन के अवसर पर हाज़िर हूँ। मैं पार्लियामेंट के दूसरे सदस्य की ओर से जमाअत अहमदिया का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। पिछले वर्षों में आपने जो मस्जिदें बनाई उनकी एक बड़ी संख्या सूबा हैंस है।

मैं विशेषता इस बात का भी शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने हमारे सूबा Hessen के लिए यह बात सम्भव बनाई कि Hessen के सूबा में स्कूलों में इस्लाम की शिक्षा दी जा रही है और इस सिलसिला में जमाअत अहमदिया ने हमारे साथ ग़ैरमामूली सहयोग किया है।

जब आपने यहां ख़ुदा का घर बनाया है तो इस का अर्थ ये है कि आप यहां अपने आपको अच्छा महसूस कर रहे हैं और एक मस्जिद का निर्माण किया है तो हुकूमत का कर्तव्य बनता है कि वह आपको समस्त बराबर के हुक़ूक़ दे जो एक धार्मिक जमाअत को चाहिएं।

आप प्रत्येक वर्ष के आरंभ में सूबा Hessen के प्रत्येक क्षेत्र में वक़ारे-ए-अमल करके सफ़ाई करते हैं और पौधे लगाने के प्रोग्रामों में हिस्सा लेते हैं और इस तरह अवाम की सेवा करते हैं।

जमाअत अहमदिया अब जर्मनी का हिस्सा है और सूबा Hessen का हिस्सा है और हमारे ज़िला का हिस्सा है। यदि कोई पड़ोसी शिकायत करता है कि इस सड़क पर एक दम इतनी गाड़ियां खड़ी हो गई हैं तो आप कदापि न घबराएँ। आप समझ लें कि इंटीग्रेशन लगभग हो गई है और आप हमारे इस शहर का निरंतर हिस्सा बन चुके हैं। आप सब का बहुत बहुत शुक्रिया। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने छः बजकर बीस मिनट पर अपना भाषण फ़रमाया।

(उद्धरित अख़बार बदर उर्दू 3, 10 जुलाई 2014 ई.)

भाषण हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ उद्घाटन के अवसर पर मस्जिद दारुल अमान Friedberg, जर्मनी

में तशहहुद-ओ-ताव्वुज़ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अलहमदु लिल्लाह कि आज फ्रेड बर्ग की जमाअत को इस मस्जिद के उद्घाटन की तौफ़ीक़ मिल रही है। एक वक्ता ने अपने ऐड्रैस में यह प्रकटन किया कि जमाअत के लिए यह ख़ुशी का दिन होगा। निश्चित तौर पर हमारे लिए ख़ुशी का दिन है क्योंकि आज हमें इस शहर में, यहां पर रहने वाले अहमदियों को एक ख़ुदा की इबादत करने

शेष पृष्ठ 12 पर

पृष्ठ 2 का शेष

गई। हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हुने अपने एक ख़त में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़ंदक़ वालों की शिकस्त और हुतम के क़तल की इत्तिला दी जिसको ज़ैद और मुअम्मर ने क़तल किया था और इस में लिखा कि इसके बाद अल्लाह तआला ने हमारे दुश्मन की अक़्लों को खत्म कर लिया। उनकी कुव्वतों को इस शराब के ज़रीया जिसको उन्होंने दिन के वक़्त पिया था ख़त्म कर दिया। हम ख़ंदक़ उबूर करके उनमें घुस गए। हमने उन्हें मदहोश पाया। सिवाए चंद एक के बाक़ी सबको हमने क़तल कर दिया। अल्लाह ने हुतम का काम भी तमाम कर दिया।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 290-291 मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

हिज्र और इस के गाँव पर हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ब्ज़ा हो गया लेकिन बहुत से मुक़ामी फ़ारसी नई हुकूमत के मुख़ालिफ़ रहे।

वे अक्सर ये ख़बर फैला कर लोगों में भय पैदा करते कि बस कोई दम जाता है कि हिज्र में हुकूमत-ए-मदीना की बिसात उलट जाएगी। मफ़रूक़ शेबानी अपनी क़ौम तग़लिब और निमिर् की फ़ौजें लिए चला आ रहा है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ये बातें मालूम हुईं तो उन्होंने हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखा कि अगर तहक़ीक़ से यह मालूम हो जाए कि बनू शेबान बिन सअलबा जिसका लीडर मफ़रूक़ था तुम पर हमला करने वाले हैं और शर पसंद अनासिर यह ख़बर मशहूर कर रहे हैं तो उनकी सरकूबी के लिए फ़ौज रवाना करना और उन लोगों को रौंद डालना और उनके अक़ब वाले क़बायल को ऐसा ख़ौफ़ज़दा करना कि उन्हें कभी सिर उठाने का हौसला न हो।

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के सरकारी ख़ुतूत पृष्ठ 49 इदारा इस्लामीयात लाहौर)

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 291मुद्रितदारुल कुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

मुर्तद होने वालों दअरीन में जमा हो गए।

इस के बारे में कुछ इतिहासकारों ने लिखा है कि दअरीन की जंग को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-ख़िलाफ़त में वर्णन किया जाता है लेकिन कुछ इतिहासकारों ने दअरीन की जंग को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में लिखते हैं। बहरहाल मुर्तद होने वालों का इजतिमा यहां हुआ।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 285 मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

(फ़ुतूहुल बुल्दान पृष्ठ 117 मोअस्सा माफ़ बेरूत 1987 ई.)

दाररीन ख़लीज-ए-फ़ारिस का एक जज़ीरा था जो बेहरीन के समक्ष चंद मील की दूरी पर स्थित है। वहां पहले से ईसाई ख़ानदान आबाद थे। हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु से शिकस्त खाने के बाद बच जाने वाले शिकस्त ख़ूर्दा बागियों का एक बड़ा हिस्सा पराजय होने वालों में बैठ कर दअरीन चला गया और दूसरे लोग अपने अपने क़बायल के इलाक़ों में पलट गए। हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़बीला बक्र बिन वायल के उन लोगों को जो इस्लाम पर क़ायम थे लिखा कि उनका मुक़ाबला करें। तथा हज़रत उत्यबा् बिन नह्हास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत आमिर बिन अब्दुल रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म भेजा कि तुम वहीं पर रहो जहां पर तुम हो और हर रास्ते पर मुर्तद होने वालों के मुक़ाबले के लिए पहरे बिठा दो। तथा उन्होंने हज़रत मिसमा रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि वह ख़ुद बढ़कर मुर्तद होने वालों का मुक़ाबला करें और उन्होंने हज़रत ख़सफ़ा तेमी रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुसन्ना बिन हारिस शेबानी रज़ियल्लाहु अन्हु हुक्म दिया कि वे भी इन मुर्तद होने वालों का मुक़ाबला करें। बेहरीन में फ़ितना इर्तेदाद की आग बुझाने में मसन्ना बिन हारिसा ने बहुत बड़ा किरदार अदा किया। उन्होंने अपनी फ़ौज के साथ हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु का साथ दिया और बेहरीन से शुमाल की तरफ़ रवाना हुए। उन्होंने कतीफ़ और हज्र पर क़ब्ज़ा किया। अपने इस मिशन में लगे रहे यहां तक कि फ़ारसी फ़ौज और उनके अमाल पर ग़ालिब आए जिन्हों ने बेहरीन के मुर्तद होने वालों की मदद की थी। मुर्तद होने वालों से क़िताल के लिए इन इलाक़ों में जो इस्लाम पर साबित-क़दम रहे थे उन्हें लेकर हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ शामिल हो गए। साहिल के साथ शुमाल की तरफ़ बढ़ते रहे और जिस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुसन्ना बिन हारसा शेबानी रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में दरयाफ़त किया तो हज़रत केस बिन आसिम रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि यह कोई ग़ैर-मारूफ़, अज्ञात गोल और ग़ैर शरीफ़ इन्सान नहीं। वह तो मुसन्ना बिन हार्सा शेबानी हैं। इसलिए हज़रत मुसन्ना बिन हार्सा शेबानी मुर्तद होने वालों के रोकने के लिए रास्तों के नाकों पर खड़े हुए और मुर्तद होने वालों में से कुछ ने तौबा की और इस्लाम ले आए जिसे तस्लीम किया गया। और कुछ ने तौबा करने से इन्कार कर दिया और इर्तेदाद पुर इसरार किया। उनको उनके इलाक़े में जाने से रोक दिया गया। इसलिए वे फिर उसी रस्ते पर पलटे जहां से वे आए थे यहां तक कि वे भी कश्तियों के द्वारा दअरी पहुंच गए। इस तरह अल्लाह ने इन सबको एक जगह जमा कर दिया। हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु अभी तक मुशरेकीन के लश्कर में ही मुक़ीम थे कि उनके पास बक्र बिन वायल, जिनको उन्होंने ख़त लिखे थे, के ख़ुतूत के जवाब मौसूल हो गए और उनको मालूम हो गया कि वे लोग अल्लाह के हुक्म पर अमल करेंगे और उस के दीन की हिमायत करेंगे। जब हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु को उन लोगों के बारे में इच्छा अनुसार ख़बर मिल गई यानी कि वे मुस्लमान हैं और बग़ावत नहीं कर रहे और लड़ाई नहीं करेंगे और उनको यक़ीन हो गया कि उनके जाने के बाद पीछे अहले बेहरीन में से किसी के साथ कोई नाख़ुशगवार वाक़िया पेश नहीं आएगा तो उन्होंने कहा कि अब समस्त मुस्लमानों को दअरी की तरफ़ चलना चाहिए और उनको दअरी पर पेशक़दमी की दाअवत दी।

यह वाक़िया जिसकी तफ़्सील आगे आएगी, इस वाक़िया को जिस तरह वर्णन किया गया है वह वास्तव में नामुमकिन नज़र आता है कि किस तरह उन्होंने समुंद्र को उबूर किया। इसके वर्णन में हो सकता है कुछ हद तक सदाक़त भी हो और कुछ बढ़ोतरी से भी काम लिया गया हो। बहरहाल अगर इस में कुछ सदाक़त है तो इसकी वज़ाहत क्या है? इसकी वज़ाहत आख़िर में वर्णन कर दूँगा। बहरहाल वर्णन किया जाता है कि मुस्लमानों के पास कश्तियां इत्यादि नहीं थीं जिन पर सवार हो कर वे जज़ीरे तक पहुंचते। यह देख कर हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और लोगों को जमा करके उनके सामने तक़रीर की जिसमें कहा कि

अल्लाह ने तुम्हारे लिए शेतानों के गिरोहों को जमा कर दिया है और जंग को समुंद्र में धकेल दिया है। वे पहले ख़ुशकी में तुम्हें अपने निशानात दिखा चुका है ताकि इन निशानात के ज़रीया समुंद्र में भी तुम सबक़ सीखो। अपने दुश्मन की तरफ़ चलो। समुंद्र को चीरते हुए उसकी तरफ़ पेशक़दमी करो क्योंकि अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे लिए इकट्ठा किया है।

इन सबने जवाब दिया कि ख़ुदा की कसम हम ऐसा ही करेंगे और वादिए दहन का चमत्कार देखने के बाद हम जब तक ज़िंदा हैं उन लोगों से नहीं डरेंगे। तिब्री में यह रिवायत लिखी हुई है। वह मोजिज़ा पहले वर्णन हो चुका है जिसमें मुस्लमानों के भागे हुए ऊंट भी वापस आ गए थे और पानी का चशमा भी जारी हुआ था। इसके बारे में उन्होंने हवाला दिया कि वह चमत्कार हम देख चुके हैं तो समुंद्र के पानी पर भी हम चलने का मोजज़ा देख लेंगे। हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो और समस्त मुस्लमान इस मुक़ाम से चल कर समुंद्र के किनारे आए। हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु और आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथी ख़ुदा के हुज़ूर यह दुआ कर रहे थे कि يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا كَرِيْمُ يَا حَلِيْمُ يَا اَحَدُ يَا صَمَدُ يَا حَيُّ يَا مُحْيِيَ الْمَوْتِ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ يَا رَبَّنَا۔ हे रहम करने वालों में से सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।

हे क्रीम हे बहुत ही बुर्दबार हे वह जो अकेला है ए बेनयाज़ हे वह जो ज़िंदा है जो दूसरों को ज़िंदगी बख़शने वाला है और हे मर्दों को ज़िंदा करने वाले हे वे जो ज़िंदा है और दूसरों को ज़िंदगी बख़शने वाला है हे वे जो क़ायम है और दूसरों को क़ायम करने वाला है हे हमारे रब तेरे सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं।

बहरहाल वर्णन किया जाता है कि हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु ने लश्कर के समस्त लोगों को कहा कि यह दुआ करते हुए समुंद्र में अपनी सवारियां डाल दें। इसलिए तमाम मुस्लमान अपने सिपहसालार हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु की पैरवी करते हुए उनके पीछे अपने घोड़ों, गधों, ऊंटों और अपने खच्चरों पर सवार हुए और उन्हें समुंद्र में डाल दिया और फिर अल्लाह की क़ुदरत इस ख़लीज को बग़ैर किसी नुक़्सान के उबूर कर लिया। ऐसा मालूम होता था कि नरम रेत जिस पर पानी छिड़का गया है इस पर चल रहे हैं कि ऊंटों के पांव तक न डूबे और समुंद्र में मुस्लमानों की कोई चीज़ ग़ायब न हुई। एक छोटी सी गठडी के ग़ायब होने का वर्णन है। उसको भी हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो उठा लाए थे। बहरहाल साहिल से दरी तक का सफ़र बयान किया जाता है कि कश्तियों के ज़रीया एक दिन और एक रात में तै होता था लेकिन इस क़ाफ़िले ने एक ही दिन के बहुत ही थोड़े वक़्त में यह फ़ासिला तै कर लिया।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 289 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

(सय्यदना हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो शख़्सियत और कारनामे अज़ अली मुहम्मद सलाबी पृष्ठ 344-345 मकतबा अल् फुर्कान ज़िला मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल पृष्ठ

241-242 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)

तारीख़ तिब्री में इस तरह उसकी यह तफ़्सीर वर्णन की गई लेकिन मौजूदा ज़माने के कुछ लेखक समुंद्र उबूर करने के इस वाक़िया का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मुम्किन है कि इस वक़्त ख़लीज-ए-फारिस में जवारभाटा आया हो या रिवायात में बढ़ोतरी हो और दरहक़ीक़त मुस्लमानों को मुक़ामी बाशिंदों के द्वारा से कश्तियां दस्तयाब हो गई हूँ जिन पर सवार हो कर उन्होंने समुंद्र उबूर किया हो। लेकिन बहरहाल रिवायत में इस तफ़सील का कहीं भी वर्णन नहीं है। मुख़्तलिफ़ लोगों ने यह रिवायत लिखी है। उन्होंने उबूर करने का वर्णन किया है लेकिन इस में शुबा नहीं कि मुस्लमान दअरी पहुंच गए थे। (हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मोहम्मद हुसैन हैकल, उर्दू अनुवाद पृष्ठ 242 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर) किस तरह पहुंचे अल्लाह बेहतर जानता है। बाक़ी रहा

चमत्कारों के बारे में तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी एक तफ़्सीर में हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम के वाक़िया को वर्णन करते हुए जो उसूली राहनुमाई की है वह वर्णन कर देता हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम की हिज्रत के वक़्त समुंद्र के फटने वाले वाक़िया की तफ़सीर और वज़ाहत करते हुए वर्णन फ़रमाया जो क़ुरआन शरीफ़ में आया है। आप फ़रमाते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम के वर्णन के मुताबिक़ वाक़िया की कैफ़ीयत यह मालूम होती है कि बनी इस्राईल अर्ज़-ए-मुक़द्दस के इरादे से चले जा रहे थे कि पीछे से फ़िरऔन का लश्कर आ पहुंचा। उसे देखकर बनी इस्राईल घबराए और समझे कि अब पकड़े जाऐंगे लेकिन ख़ुदा तआला ने हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम की मार्फ़त उनको तसल्ली दिलाई और हज़रतमूसा अलैहिस्सलाम से कहा कि अपना सोटा समुंद्र पर मारें जिसका नतीजा यह हुआ कि समुंद्र में एक रास्ता हो गया और वह इस में से आगे रवाना हुए। उनके दोनों तरफ़ पानी था जो रेत के टीलों की भांति अर्थात ऊंचा नज़र आता था। लश्कर फ़िरऔन ने उनका पीछा किया परन्तु बनी इस्राईल के सही सलामत पार होने पर पानी फिर लौटा और मिस्री ग़र्क़ हो गए। अब लिखते हैं कि इस वाक़िया के समझने के लिए यह बात याद रखनी चाहिए कि क़ुरआन-ए-करीम की तालीम के मुताबिक़ समस्त चमत्कार अल्लाह तआला की तरफ़ से होते हैं और किसी इन्सान का इस में दख़ल और तसर्रुफ़ नहीं होता। अतः हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम क़ा सोटा उठाना और समुंद्र पर मारना केवल एक निशानी के लिए था न इसलिए कि हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम का या सोटे का समुंद्र के सिमट जाने में कोई दख़ल था। इस सोटे का समुंद्र के सिमट जाने में कोई दख़ल था। इसी तरह यह भी याद रखना चाहिए कि क़ुरआन-ए-करीम के शब्दों से कदापि साबित नहीं कि समुंद्र के दो टुकड़े हो गए थे और इस में से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम निकल गए थे बल्कि क़ुरान-ए-करीम में इस वाक़िया के विषय में दो शब्द इस्तिमाल किए गए हैं, एक فَرَقَا और एक اِنْفَلَقَ, जिनके अर्थ जुदा हो जाने के हैं। अतः क़ुरआन-ए-करीम के शब्दों के अनुसार इस वाक़िया की यही तफ़्सील साबित होती है कि बनी इस्राईल के गुज़रने के वक़्त समुंद्र जुदा हो गया था अर्थात किनारे से हट गया था और जो ख़ुशकी निकल आई थी इस में से बनी इस्राईल गुज़र गए थे और समुंद्र के किनारों पर ऐसा हो जाया करता है।

इसलिए नेपोलीन की (ज़िंदगी) लाईफ़ में भी लिखा है कि जब वह मिस्र पर हमला-आवर हुआ तो वह भी अपनी फ़ौज के एक हिस्सा समेत बहीरा अहमर के किनारे के पास जवार भाटे के वक़्त गुज़रा था और उस के गुज़रते गुज़रते मदा का समय आ गया और मुश्किल से बचा। इस घटना में चमत्कार यह था अर्थात हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम वाले वाक़िया में जो चमत्कार था यह था कि अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल को ऐसे वक़्त में समुंद्र के सामने पहुंचाया जबकि जवार भाटे का वक़्त था और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हाथ उठाते ही अल्लाह तआला के हुक्म के अधीन पानी घटना शुरू हुआ लेकिन फ़िरऔन का लश्कर जब समुंद्र में दाख़िल हुआ तो ऐसी ग़ैरमामूली रोकें उसके रास्ते में पैदा हो गईं कि इस की फ़ौज बहुत सुस्त रफ़्तारी से बनी इस्राईल के पीछे चली और अभी समुंद्र ही में थी कि मदा आ गई और दुश्मन ग़र्क़ हो गया ... समुंद्र में मुद्दो जज़र पैदा होता रहता है और एक वक़्त में पानी किनारे पर से बहुत दूर पीछे हट जाता है और दूसरे वक़्त में वह ख़ुशकी पर और आगे आ जाता है।

समुंद्र फाड़ने के वाक़िया का इसी मुद्दो जज़र की कैफ़ीयत से ताल्लुक़ है।

हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम ऐसे वक़्त में समुंद्र से गुज़रे जबकि जवार भाटे का वक़्त था और समुंद्र पीछे हटा हुआ था और इस के बाद फ़िरऔन पहुंचा। वह बाव्जाह उसके कि कम से कम एक दिन बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चला था वह मारा मार करता हुआ जिस वक़्त समुंद्र पर पहुंचा है उस वक़्त हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम समुंद्र के इस ख़ुशक टुकड़े का जिस से वे गुज़र रहे थे अक्सर हिस्सा तै कर चुके थे। फ़िरऔन ने उनको पार होते देख कर जल्दी से इस में अपनी रथें डाल दिन परन्तु समुंद्र की रेत जो गीली थी उसकी रथों के लिए मोहलिक साबित हुई और उसकी रथें इस में फंसने लगीं और इस क़दर देर हो गई कि मदा का वक़्त आ गया और पानी बढ़ने लगा। अब उसके लिए दोनों बातें मुश्किल थीं। न वह आगे बढ़ सकता था न पीछे। नतीजा यह हुआ कि समुंद्र ने उसे दरमयान में आ लिया और वह और उस के बहुत से साथी समुंद्र में ग़र्क़ हो गए और चूँकि मदा का वक़्त था, समुंद्र का पानी जो किनारे की तरफ़ बढ़ रहा था उसने उनकी लाशों को ख़ुशकी की तरफ़ ला फेंका।

(उद्धरित तफ़्सीर कबीर भाग 1पृष्ठ 419 से 422)

बहरहाल मुस्लमान दअरीन किसी तरह पहुंच गए थे जैसा कि मैं ने बयान किया है और वे भी हो सकता है कि इसी तरह का जवार भाटे वाला कोई वाक़िया हुआ हो।

दअरीन पहुंच कर वहां मुस्लमानों का और मुर्तद बाग़ियों का मुक़ाबला हुआ और निहायत ही ख़ूँरेज़ जंग हुई जिसमें वे सब मारे गए

यानी बाग़ी मारे गए। कोई ख़बर देने वाला भी न बच्चा। मुस्लमानों ने उनके परिवार वालों को लौंडी या ग़ुलाम बना लिया और उनके अमलाक पर क़ब्ज़ा कर लिया। हर एक घोड़ेसवार को छः हज़ार और हर प्यादे को दो हज़ार दिरहम ग़नीमत में मिले। मुस्लमानों को साहिल समुंद्र से उन तक पहुंचने और उनके मुक़ाबले में पूरा दिन सिर्फ हो गया। उनसे फ़ारिग़ हो कर वे फिर वापस आ गए।

हज़रत सुमामा बिन उसाल रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत का वाक़िया लिखा है कि हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु तमाम लोगों को वापस ले आए सिवाए उन लोगों के जिन्हों ने वहीं पर क़ियाम करने को पसंद किया। हज़रत सुमामह बिन उसाल रज़ियल्लाहु अन्हु भी वापस आने वालों में थे। अब्दुल्लाह बिन हुज़्फ़ रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हम बनू केस बिन सालबा के एक चशमा पर मुक़ीम थे। लोगों की नज़र हज़रत सुमामा रज़ियल्लाहु अन्हु पर पड़ी और उन्होंने हुतम का चोग़ा आप रज़ियल्लाहु अन्हु के जिस्म पर देखा। हुतम का यह वही चोग़ा था जो उसके क़तल होने के बाद माल-ए-ग़नीमत में हज़रत सुमामा रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया गया था। उन्होंने एक शख़्स को दरयाफ़त के लिए भेजा, यानी इस क़बीले वालों ने और उसे कहा कि जा कर हज़रत सुमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से दरयाफ़त करो कि यह चोग़ा तुम्हें कहाँ से मिला है और हुतम के विषय में दरयाफ़त करो कि क्या तुमने ही उसे क़तल किया था (हुतम उनका लीडर था) या किसी और ने? उस शख़्स ने आकर हज़रत सुमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से चोग़ा के विषय में पूछा। उन्होंने कहा कि ये मुझे माल-ए-ग़नीमत में मिला है। इस शख़्स ने कहा कि तुमने हुतम को क़तल किया है? हज़रत सुमामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि नहीं। जबकि मेरी तमन्ना थी कि मैं उस

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR

طالب دعا

Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affiliated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001

0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

को क़तल करता। उस शख़्स ने कहा कि यह चोग़ा तुम्हारे पास कहाँ से आया है? हज़रत सुमामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा उस का जवाब में तुम्हें पहले ही दे चुका हूँ कि माल-ए-ग़नीमत में मिला है। तो इस क़बीले के इस शख़्स ने आके अपने दोस्तों को अपनी सारी गुफ़्तगु की इत्तिला दी। वे सब फिर हज़रत सुमामा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास इकट्ठे हो के आए और उनको आकर घेर लिया। इन सबने कहा कि तुम हुतम के क़ातिल हो। हज़रत सुमामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि तुम झूठे हो। मैं उसका क़ातिल नहीं हूँ। जबकि यह चोग़ा मुझे माल-ए-ग़नीमत में बतौर हिस्सा के मिला है। उन्होंने कहा कि हिस्सा तो केवल क़ातिल ही को मिलता है हज़रत सुमामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि यह चोग़ा उसके जिस्म पर नहीं था बल्कि उसकी सवारी या उसके सामान से मिला है। लोगों ने कहा कि तुम झूठ बोलते हो। फिर उनको शहीद कर दिया।

(अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 289 से 290 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

दसवीं मुहिम के बारे में लिखा है कि यह हज़रत सुवैद बिन मुकर्रिन रज़ियल्लाहु अन्हो की मुर्तद बाग़ियों के ख़िलाफ़ मुहिम थी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक झंडा हज़रत सुवैद बिन मुकर्रिन रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया और उनको हुक्म दिया कि वे यमन के इलाक़े तिहामा को जाएं।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 257 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

लुग़त में तिहामा के अर्थ शिद्दते गर्मी और हवा के रुक जाने के भी हैं। इसी तरह लुग़त में इस के एक मअनी नशीब के भी हैं।

(लिसानुल अरब ज़ेर माद्दा : तहम)

यमन के मग़रिब और जुनूब में बहर-ए-क़ुलज़ुम के साहिल पर नशीबी अराज़ी की एक पट्टी है जिसे तिहामा कहते हैं। इस अराज़ी में बहुत सी नीची लेकिन ते ब ते पहाड़ियां पाई जाती हैं। तिहामा की शुमाली सरहद मक्का के क़रीब पहुँचती थी और जुनूबी यमन के पाया तख़्त सना से कोई साढ़े तीन सौ मेल के फ़ासले पर ख़त्म होती थी।

तिहामा यमन का एक ज़िला था जिसमें बहुत से गांव और क़स्बे थे।

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के सरकारी पत्र पृष्ठ 40-41 इदारा इस्लामीयात लाहौर)

यह तो तिहामायमीन का मुख़्तसर परिचय है।

हज़रत सुवैद बिन मुकर्रिन रज़ियल्लाहु अन्हो का परिचय यह है कि हज़रत सुवैद रज़ियल्लाहु अन्हु के पिता का नाम मुकर्रिन बिन आयज़ था। उनका ताल्लुक़ मुज़ीना क़बीला से था। उनकी कुनिय्यत अबू अदी थी। अबू अम्र भी कुनिय्यत बयान की गई है। पाँच हिज्री में उन्होंने इस्लाम क़बूल किया। उन्होंने जंग-ए-ख़ंदक़ में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शमूलीयत की। फिर उसके बाद समस्त ग़ज़वात में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रहे। आप हज़रत नुमान बिन मुकर्रिन रज़ियल्लाहु अन्हो के भाई थे जिन्हों ने ईरानी फ़ुतूहात में कारहाए नुमायां सरअंजाम दिए थे।

(ओसोदुल गाब्रा भाग 2 पृष्ठ 600 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2008 ई.)

(उद्धरित तबक़ातुल कुबरा भाग 6 पृष्ठ 97 भाग प्रथम पृष्ठ 222 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

तारीख़ी कुतुब में हज़रत सुवैद रज़ियल्लाहु अन्हु के तिहामा जाने और वहां उनके मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ कार्यवाईयों की तफ़्सील नहीं मिलती ताहम कुतुब तारीख़ में अहल तिहामा के इर्तेदाद और बग़ावत के हालात और वाक़ियात यूं बयान हुए हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दस हिज्री में हज्जतुल विदा के बाद यमन में ज़कात के मोहस्सिल निर्धारित फ़रमाए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यमन को सात हिस्सों में तक़सीम फ़रमाया था। तिहामा पर ताहेर बिन अबू हाला को आमिल मुक़र्रर फ़रमाया था।

तिहामा में अदना दर्जा के अरबों के इलावा दो बड़े और अहम क़बीले थे। एक अक् और दूसरा अशअर।

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के सरकारी ख़ुतूत पृष्ठ 41 इदारा इस्लामीयात लाहौर)

तारीख़ तिब्री में लिखा है कि सबसे पहले हज़रत अत्ताब बिन उसैद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान बिन अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखा कि हमारे इलाक़े में मुर्तद होने वालों ने मुस्लमानों पर हमला कर दिया है।

मुर्तद होने वालों केवल मुर्तद होने वालों नहीं थे बल्कि जैसा कि पहले भी वर्णन कर चुका हूँ ये लोग मुस्लमानों पर हमले भी करते थे।

यहां भी यही सूरत-ए-हाल थी। तो हज़रत अत्ताब आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने भाई हज़रत ख़ालिद बिन उसैद रज़ियल्लाहु अन्हु को अहल-ए-तिहामा की सरकूबी के लिए भेजा जहां बनू मुद्लिज् की एक बड़ी जमाअत और ख़ुज़ा अहवार किनानह की मुख़्तलिफ़ जमाअतें बनूमुदलिज के ख़ानदान बनू शनूक़ के जुन्दुब बिन सलमा की सरकर्दगी में मुर्तद हो कर मुक़ाबला के लिए जमा थीं। दोनों हरीफ़ों का मुक़ाबला हुआ और हज़रत ख़ालिद बिन उसैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको शिकस्त देकर परागंदा कर दिया और बहुत सारे अफ़राद को क़तल कर दिया। इस में बनू शनूक़ के अफ़राद सबसे ज़्यादा मारे गए। इस वाक़िया के बाद उनकी संख्यां बहुत कम रह गई। इस वाक़िया ने हज़रत अत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो के इलाक़े को फ़ितन-ए-इर्तेदाद से पाक साफ़ कर दिया और जुन्दुब भाग गया। फिर कुछ अरसा बाद उसने दुबारा इस्लाम क़बूल कर लिया।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 294 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

(अल्कामिल फिल तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 230 दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान)

एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद तिहामह में सबसे ज़्यादा क़बीला अक् और अशअर ने बग़ावत की और इसकी तफ़सील यह है कि जब उनको नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात की इत्तिला मिली तो उनमें से मुतफ़र्रिक़ लोग जमा हुए और फिर ख़ज़िम क़बीला के लोग भी उनके साथ जा मिले। उन्होंने साहिल समुंद्र की जानिब अलाब मुक़ाम में अपना पड़ाव डाला और उनके साथ वे सिपाही भी आ मिले जिनका कोई सरदार न था। अलाब जो है यह भी मक्का के साहिल के दरमयान क़बीला अक का इलाक़ा है। हज़रत ताहर बिन अबू हाला रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को इसकी इत्तिला दी और ख़ुद उनकी सरकूबी के लिए रवाना हुए और अपनी रवानगी की इत्तिला भी उन्होंने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को लिख दी। हज़रत ताहेर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ मसरूक़ अक्की और क़बीला अक में से उनकी क़ौम के वे अफ़राद थे जो मुर्तद नहीं हुए थे। यहां तक कि मुक़ाम अलाब में उन लोगों से जा मिले और वहां उनसे शदीद जंग के बाद अल्लाह तआला ने उन लोगों को, दुश्मनों को शिकस्त दी। मुस्लमानों ने उनको बे दरेग़ क़तल किया। तमाम रास्तों में उनके मक़्तूलीन की बदबू फैल गई और मुस्लमानों को एक शानदार फ़तह हासिल हुई।

तिहामह में इर्तिदाद के वाक़ियात का वर्णन करते हुए एक मुसन्निफ़ ने लिखा है कि तिहामह के इर्तिदाद को कुचलने में सबसे आगे ताहेर बिन अबी हाला थे जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जानिब से तिहामह के लिए तिहामह के हिस्सा पर निगरान थे जो क़बीला अक और अशरियों का वतन था। फिर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उकाशा बिन सूर को हुक्म दिया कि वह तिहामह में इक़ामत पज़ीर हों और अपने पास उस के बाशिंदों को इकट्ठा कर के हुक्म का, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के हुक्म का इंतिज़ार करें। हज़रत उकाशा रज़ियल्लाहु अन्हो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के वक़्त हज़र मौत के दो इलाक़ों सकासिक और सकून पर आमिल मुक़र्रर थे और बजीला क़बीला के पास हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जरीर बिन अब्दुल्लाह बिजली रज़ियल्लाहु अन्हो को वापस भेजा और उन्हें हुक्म दिया कि वह अपनी क़ौम के साबित-क़दम रहने वाले मुस्लमानों को लेकर इस्लाम से मुर्तद होने वालों से क़िताल करें और फिर क़बीला ख़तम के पास पहुँचीं और उनके मुर्तद होने वालों से क़िताल करें। जरीर अपनी मुहिम पर रवाना हुए और सिद्दीक़-ए- अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जो हुक्म दिया था उस को बजा लाए और थोड़े से अफ़राद के इलावा उनके मुक़ाबले में कोई न आया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको क़तल किया और उन्हें मुंतशिर कर दिया।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 294-295 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

(अल् कामिल फ़िल तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 230 दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान)

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मोहम्मद सलाबी मुतर्जिम पृष्ठ 303 मकतबा अल् फ़ुर्कान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

(मोअज्जमुल बुल्दान भाग 1 पृष्ठ 263)

यह मुहिम्मात का वर्णन हो रहा है आगे इं शा अल्लाह ग्यारवीं मुहिम का वर्णन होगा।

इस वक़्त में चंद मरहूमीन का वर्णन करना चाहता हूँ। उनमें से दो तो बुर्कीना

फासो के हमारे नौजवान हैं। 11 जून की शाम को ये अपने इलाक़े, डोरी रीजन के इलाक़े में एक गांव में थे जहां दहशतगरदों ने हमला किया और यहां बहुत से अफ़राद मारे गए। इस में हमारे ये दो अहमदी ख़ादिम भी शहीद हुए जो अपनी दुकान पर काम कर रहे थे। फायरिंग हुई और ये अवसर पर शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। एक उनमें से जो हैं उनका नाम है डीको ज़करीया (dicku zakariya)

उनकी उम्र 32 साल थी। डोरी रीजन में उनको बतौर रीजनल क़ायद ख़ुद्दामुल अहमदिया ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। मद्रसस्तुल हिफ्ज़ घाना में क़ुरआन-ए-करीम हिफ़्ज़ करने के लिए भी गए थे। कुछ अरसा हिफ़्ज़ किया फिर वापस आगए। हमेशा जमाअती कामों के लिए हाज़िर रहते थे। हर काम के लिए लब्बैक कह कर अपने आपको पेश करते थे। पांचो समय नमाज़ों के पाबंद थे। तहज्जुद और नवाफ़िल भी बाक़ायदा अदा करने वाले थे। अपने चंदा जात भी बाक़ायदा अदा करते थे। माहाना आमद के इलावा भी कोई आमद होती तो इस पर भी फ़ौरी चंदा अदा करते। जमाअत और ख़िलाफ़त से सच्ची मुहब्बत थी। बाक़ायदा ख़ुतबा जुमा सुना करते थे। एम.टी.ए के दूसरे प्रोग्राम बड़े शौक़ से देखा करते थे। उनके लोकल मिशनरी कहते हैं कि उनके साथ आख़िरी मुलाक़ात में उन्होंने कहा कि ख़लीफ़-ए-वक़्त से कब मुलाक़ात नसीब होती है। उनकी बड़ी ख़ाहिश थी ख़लीफ़-ए-वक़्त से मिलने की। यह मुअल्लिम साहिब ने लिखा है कि एक मिसाली ख़ादिम थे। पीछे रहने वालों में उनकी एक पत्नी और दो बेटियां और एक बेटा शामिल हैं।

दूसरे शहीद जो थे वे डीको मूसा (dicku mussa) साहिब थे। उनकी उम्र 34 वर्ष थी। यह उस वक़्त अपनी मज्लिस साई तुंगा (seytenga) के क़ायद ख़ुद्दामुल अहमदिया थे। अपनी जमाअत के तमाम प्रोग्रामों में सबसे बढ़कर हिस्सा लेते। दूसरों को शामिल करते। नमाज़ों और चंदाजात में बाक़ायदा थे। उनकी जमाअत में मस्जिद नहीं थी तो यह मुक़ामी तौर पर कोशिश कर रहे थे एक शैड बना कर वहां बाक़ायदा नमाज़ अदा करें। यह मुझे ख़त भी बाक़ायदा लिखते रहते थे। कैपीटल से कोई भी दौरे के लिए जाता तो इस की ख़ातिर तवाज़ो करते। ख़ुद साथ साथ रहते, काम करवाते, दौरा में शामिल होते। उनके पीछे रहने वालों में उनकी दो बीवीयां हैं और तीन बेटियां हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे।

इन दोनों शुहदा के बारे में वहां के अमीर जमाअत लिखते हैं : ये दोनों ख़ुद्दाम हमारे लोकल मिशनरी डीको अहमद बूरीमा (dicku amadou bourema) साहिब के भाई थे जो कि इस वक़्त रेडीयो अहमदिया डोरी के इंचार्ज हैं। उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके पिता इबराहीम बुनती (bonti) साहिब के ज़रीया से आई थी। वह बहुत ही मुख़लिस और पुरजोश दाई इलल्लाह थे। वह डोरी रीजन के ज़ईम अंसारुल्लाह भी रहे। 2011 ई. में उनकी वफ़ात हो गई थी। फिर आगे अमीर साहिब दुआ के लिए भी लिखते हैं कि बुर्कीना फासो में 2015 ई. से दहशतगर्द हमले हो रहे हैं और मलिक के नॉर्थ के इलाक़े में बहुत ज़्यादा तबाही है। दो मिलियन से ज़ायद लोग बे-घर हो चुके हैं। अल्लाह तआला उनके भी अमन के हालात पैदा करे और दुनिया के जो मआशी और सयासी हालात अब हो रहे हैं उनसे दहशतगर्दी के इमकानात मज़ीद बढ़ रहे हैं। अल्लाह तआला ही इन्सानियत पर रहम फ़रमाए और उनको अक़्ल दे।

दूसरा वर्णन मुहम्मद यूसुफ़ बलोच साहिब इबन नौरंग ख़ान साहब, बस्ती सादिक़ पूर ज़िला उमर कोट सिंध का है। उनकी भी पिछले दिनों वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह बलोच हैं। डेरा ग़ाज़ी ख़ान के हैं। वहां पैदा हुए थे। 1934 ई. में हज़रत मौलाना गुलाम रसूल राजीकी साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़रीया से उनके हाँ, उनके ख़ानदान में अहमदियत आई। क़ियाम-ए-पाकिस्तान के बाद हिज्रत कर के यह तहरीक जदीद की ज़मीनों पर सादिक़ पूर ज़िला उमरकोट में आगए। फिर यह कुछ अरसा छः साल के क़रीब रब्वाह में भी मुक़ीम रहे और इस मुहल्ले में ख़ादिम मस्जिद के तौर पर उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। अल्लाह के फ़ज़्ल से मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा सात बेटे और चार बेटियां शामिल हैं। आपके एक बेटे शब्बीर अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं। आजकल आयोरी कोस्ट में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं और मैदान-ए-अमल में होने की वजह से अपने पिता के जनाज़े में शरीक नहीं हो सके। मरहूम के दो पोते भी मुरब्बी सिलसिला हैं।

उनके बेटे शब्बीर साहिब मुरब्बी सिलसिला लिखते हैं कि बहुत सारी ख़ूबीयों के मालिक थे। हमने बचपन से उनको तहज्जुद का पाबंद देखा। रोज़ाना फ़ज्र के बाद बुलंद आवाज़ से तिलावत किया करते थे। ख़िलाफ़त से बे-इंतेहा मुहब्बत करने वाले थे। कहते हैं जब भी मैं घर गया हूँ तो मुझे बुला कर कहते कि मेरी दो बातें हमेशा याद रखना कि ख़िलाफ़त से हमेशा वफ़ा करना और अपने वक़्फ़ का हक़ अदा करना। कहते हैं मेहमान नवाज़ भी बहुत थे। राह चलते लोगों को घर ले आते। आपकी ताज़ियत पर भी बहुत से ग़ैर अज़ जमाअत लोग और हिंदू इत्यादि सब आए और बड़े अच्छे अलफ़ाज़ में उनको याद किया और यह भी इज़्हार किया कि हमारा बाप फ़ौत हो गया है क्योंकि गरीबों की बहुत मदद किया करते थे।

तीसरा वर्णन अज़ीज़ा मुबारज़ा फ़ारूक़ (वाकिफ-ए-नौ) का हैं जो फ़ारूक़ अहमद साहिब की बेटी थीं। यह रब्वाह की हैं। उनका भी गुज़शता दिनों इंतिक़ाल हुआ है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह बच्ची जब ग्यारह साल की थी तो हाईटेंशन बिजली की तार को हाथ लगाने की वजह से उनके दोनों बाज़ू ख़त्म हो गए, ख़राब हो गए और फिर दोनों बाज़ू काटने पड़े लेकिन इस हालत में भी अज़ीज़ा ने हिम्मत नहीं हारी। अपनी तालीम को जारी रखा। पहले उसने मुँह से क़लम पकड़ कर लिखने की प्रैक्टिस की। फिर दोनों कोहनियों के साथ क़लम पकड़ कर लिखने की मश्क़ की और इस तरह चंद माह में निहायत ख़ुशख़त लिखने लगी। तालीम का सिलसिला भी जारी रखा। कुछ अरसा बाद यह फ़ैमिली रबोह शिफ़्ट हो गई। यहां भी अपनी तालीम जारी रखी। 2013 ई. में अच्छे नंबरों में बी.ए. पास कर लिया। फिर तालीमुल इस्लाम कॉलेज से एम.ए. अरबी भी किया। वाकिफ-ए-नौ की हैसियत से कुछ अरसा उन्होंने ताहेर हार्ट इंस्टीटियूट में भी ख़िदमत की। क़ुरआन-ए-करीम सेहत तलफ़्फ़ुज़ के साथ और लफ़्ज़ी अनुवाद के साथ सीखा और हिमेश सौ फ़ीसद नंबर लिया करती थीं। मुहल्ला में तर्जुमतुल क़ुरआन क्लास भी लेती थीं। उनके पीछे रहने वालों में माता पिता के इलावा दो भाई और दो बहनें हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके माता पिता को भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए।

अगला वर्णन है आदरणीय आनज़ुमाना वाता (aanzumana wattara) साहिब जो एवरी कोस्ट में मासादागो इलाक़े के मुअल्लिम सिलसिला थे। उनकी भी पिछले दिनों वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

वहां के मिशनरी इंचार्ज लिखते हैं कि मरहूम सादा, नमाज़ रोज़े के पाबंद, मुनकसिरुल मिज़ाज, दुआ-गो, नेक और पार्सा बुज़ुर्ग थे। कसरत से नवाफ़िल अदा करते और सोमवार और जुमेरात को नफ़्ली रोज़ा बाक़ायदगी से रखते थे। कसरत से उनकी दुआएं भी क़बूल होती थीं। ख़िलाफ़त से उनको एक अत्यधिक इशक़ था। एक बेहतरीन मुबल्लिग़ थे। 1997 ई. में एक ख़ाब के माध्यम से उन्होंने अहमदियत क़बूल की और ख़ाब में देखा कि एक जंगल में हैं और वहां से एक जगह नासीयाँ गांव है, वहां जा रहे हैं और एक तलवार के साथ वहां जाने के लिए रास्ता बना रहे हैं और साथ ही कलिमा तुय्यबा ऊंची आवाज़ से पढ़ते हुए जा रहे हैं। कहते हैं इस ख़ाब के बाद एक दिन मुझे पता चला कि एक अहमदी मिशनरी उमर माज़ साहिब नासियाँ तब्लीग़ के लिए आए हैं तो ये ख़ुद भी नासियाँ तशरीफ़ ले गए और जमाअत का पैग़ाम सुनते ही बैअत कर ली और कहा कि यही वह पैग़ाम था जिसको क़बूल करने के लिए अल्लाह तआला ने मुझे ख़ाब में बताया था। कोशिश कर के मैंने इस गांव में जाना है जहां मुझे दीन मिलेगा। बहरहाल क़ुबूलियत-ए-अहमदियत के कुछ अरसा के बाद आपने वक़्फ़ किया और बाक़ायदा मुअल्लिम सिलसिला के तौर पर जमाअत की ख़िदमत शुरू की। 2002 ई. में जब मुल्क में ख़ाना-जंगी शुरू हुई तो मर्कज़ का उनकी जगह से सम्पर्क बहाल नहीं रह सका। मुअल्लिम साहिब ने गांव और इर्द-गिर्द की जमाअतों में अपना राबिता बहाल रखा और जमाअत के अफ़राद के लिए तालीम-ओ-तर्बीयत का काम हर हाल में जारी रखा और मर्कज़ से राबिता में रहे। इस तरह उन्होंने अपने गांव में, अपने घर के अहाते में एक मस्जिद भी तामीर की और वहीं से अहबाब जमाअत की तालीम-ओ-तर्बीयत का काम भी करते थे। इस तरह नैशनल सतह के हर जमाअती प्रोग्राम में बाक़ायदगी से लंबा सफ़र तय कर के शामिल होते थे। 1998 ई. में आपको जलसा सालाना यू.के में शिरकत का अवसर मिला। उनको हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबा रहमहुल्लाह तआला से भी मुलाक़ात का शरफ़ हासिल हुआ और हुज़ूर रहमहुल्लाह तआला के साथ एम.टी.ए के प्रोग्राम the french mulaqat जो थी इस में भी शिरकत का अवसर मिला और इस मुलाक़ात से बहुत ख़ुश थे और लोगों को सुनाया करते थे कि यह मुलाक़ात मेरी ज़िंदगी का बहुत ख़ूबसूरत हिस्सा है इस को मैं बयान नहीं कर सकता। 2004 ई. में जब मैं ने बुर्कीना फासो का दौरा किया तो वहां यह मुझ से मिले और कहने लगे कि यह जो मैं आपसे मिल रहा हूँ यह मैं अपनी एक नई ज़िंदगी की वजह से मिल रहा हूँ। और यह आपके दौरा

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 04 August 2022 Issue No. 31

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

की वजह से अल्लाह तआला ने मुझ पर फ़ज़्ल फ़रमाया है और यह बरकत मुझे हासिल हो रही है। कहने लगे कि दो माह पहले मैं शदीद बीमार हो गया यहां तक कि घर वालों ने समझा कि शायद मेरा आख़िरी वक़्त है। कहते हैं उस वक़्त मैंने ख़्वाब में देखा। अर्थात उन्होंने मुझे ख़्वाब में देखा कि मैं उनके सिर पर हाथ फेर रहा हूँ और कहते हैं ख़्वाब ही में मैंने महसूस किया कि तमाम बीमारी जिस्म को छोड़ चुकी है। कहते हैं जब मैं बेदार हुआ तो वास्तव में बीमारी मुझे छोड़ चुकी थी और मैं सेहत याब हो गया था। बहरहाल जब मैं ने वहां दौरा किया तो उन्होंने कहा कि अब इस ख़्वाब को जो मैंने देखी थी अमली शक्ल में पूरा भी कर दें और अपना सिर आगे कर दिया कि इस पर हाथ फेरें और बड़े ख़ुश थे। ख़िलाफ़त से कामिल वफ़ा का ताल्लुक़ था और लोगों को बताते थे कि यह ज़िंदगी जो मुझे मिली है वह इसलिए मिली है कि मैं ख़िदमते दीन करूँ और अब मैं इसी काम में अपनी ज़िंदगी सिर्फ़ करूँगा और इस अहद को उन्होंने निभाया। 94 वर्ष की उम्र पाई और आख़री उम्र तक फ़आल और सेहत मंद थे। पीराना-साली के बावजूद क़रीबी जमाअतों का दौरा भी ख़ुद किया करते थे। उनकी दूसरी मुलाक़ात भी 2008 ई. में मुझ से हुई जब मैं घाना गया हूँ तो वहां पर यह आए और घाना में जुबली के जलसा में शामिल हुए। बड़े ख़ुश थे।

"बन्दूको" के रीजनल मिशनरी शाहिद साहिब कहते हैं कि पाकिस्तानी मुबल्लग़ीन से बहुत मुहब्बत का ताल्लुक़ रखते थे। बड़ी आजिज़ी और इनकेसारी से मिलते थे। बहुत इज़्ज़त और अहतेराम से पेश आते थे और माली क़ुर्बानी में भी हमेशा पेश पेश थे। बाक़ायदगी से चंदा दिया करते थे। कहते हैं इस साल जनवरी के आख़िर में जब मैं उनके गांव दौरे पर गया तो मुअल्लिम साहिब ने मुझे कहा कि इस साल मैं चला जाऊँगा। मैंने कहा क्या आपने सफ़र पर कहीं जाना है? कहते हैं नहीं। मैं इस दुनिया से चला जाऊँगा क्योंकि इस साल मैं बहुत ख़ुश हूँ। मुबल्लिग़ साहब कहते हैं फिर उन्होंने कहा कि मैंने अल्लाह की ख़ातिर ज़िंदगी-भर काम किया। "अल्लाह तआला की ज़ात पर बड़ा यक़ीन था" और अब मैं अपनी तनख़्वाह लेने अल्लाह के पास जा रहा हूँ और वफ़ात से एक हफ़्ता क़बल उन्होंने अपनी फ़ैमिली को कहा कि मेरा अब अल्लाह तआला से एक हफ़्ते का कंट्रैक्ट है। एक हफ़्ता रह गया है बाक़ी। कहते हैं अगले जुमा एक हफ़्ता के बाद सुबह यह हसब-ए-मामूल तहज्जुद के लिए उठे, वुज़ू किया और वुज़ू मुकम्मल किया ही था कि वुज़ू करते करते वहीं उसी जगह पर अपने ख़ालिक़ हक़ीक़ी से जा मिले। चक्कर आया उनको और वहीं गिरे। तो इस किस्म के बेलौस और इख़लास-ओ-वफ़ा से भरे हुए दूर दराज़ इलाक़ों में रहने वाले लोग हैं जो अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम को अता फ़रमाए हैं जो इस्लाम का पैग़ाम दुनिया में फैला रहे हैं। अल्लाह तआला ऐसे बेनफ़्स जमाअत को हमेशा अता करता रहे और ख़िदमत करने वाले भी हों।

उनके पीछे रहने वालों में पाँच बेटे और छः बेटियां शामिल हैं। अल्लाह के फ़ज़्ल से सब अहमदियत पर क़ायम हैं। अल्लाह तआला उन्हें साबित क़दम भी अता फ़रमाए और अपने वालिद के नक़्श-ए-क़दम पर चलने वाले हों।

नमाज़-ए-जुमा के बाद मैं उनकी सबकी नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा।

★ ★ ★

पृष्ठ 07 का शेष

के लिए एक घर और जगह उपलब्ध हो गई। यहां पाँच समय आकर नमाज़ें अदा कर सकते हैं। इस का नाम "मस्जिददार अमान" रखा गया है। यह मस्जिद जहां हमें इबादत करने के लिए जगह प्रदान करती है वहां जैसा कि इसके नाम से भी प्रकट है यहां आने वाले अमन और सलामती की तलाश में यहां आते हैं क्योंकि ख़ुदा तआला जो अपनी मख़लूक़ को पैदा करने वाला है वह अपनी मख़लूक़ के लिए अमन और सलामती और संरक्षण चाहता है, और यही इस मस्जिद का उद्देश्य है, और फिर यही नहीं कि यहां आने वाले अमन में होंगे बल्कि इस नाम से यह भी प्रकट है कि यह मस्जिद इस इलाक़े के लोगों के लिए, मित्रों के लिए, प्रत्येक व्यक्ति के लिए चाहे वह किसी भी मज़हब-ओ-मिल्लत का है, चाहे वह धर्म पर विश्वास रखता है या नहीं, अमन और सलामती और संरक्षण की ज़मानत है। अतः यह मस्जिद का बुनियादी उद्देश्य है। और इन शा अल्लाह यह उद्देश्य यहां आने वाले पूरा करने का प्रयास करेंगे।

यहां Integration का वर्णन हुआ, कि जब आदमी किसी जगह पर अपना घर बनालेता है तो इस का अर्थ यह है कि वह वहां पर Integrate हो रहा है, या होना चाहता है, या उन लोगों में अपने आपको मिलाना चाहता है। परन्तु मेरे निकट Integration का इस से भी बढ़कर अर्थ है कि जहां आप रहते हैं, जिस शहर में आप रहते हैं, जिस मुल्क में आप रहते हैं वहां के लिए आप अपने दिल में एक मुहब्बत और प्यार भी पैदा करें और इस की बेहतरी और प्रगति के लिए प्रयास भी करें और यही जमाअत अहमदिया का उद्देश्य है कि जब जमाअत के बाहर से आने वाले Immigrants किसी जगह जा कर आबाद होते हैं, अब यहां पैदा होने वाले जो बच्चे हैं वह जर्मन नैशनल हैं, तो उनका कर्तव्य बनता है कि Integration के इस उद्देश्य को समझें कि हम जिस मुल्क में रहते हैं उसकी सेवा करनी है उस की प्रगति में हिस्सा लेना है उस की बेहतरी के लिए अपनी पूरी सलाहीयतों को को काम में लाना है और जब यह होगा तो तभी हम सही तौर पर कह सकते हैं कि हम इस क़ौम में, इस मुल्क में सही तरह Integrate हो गए हैं। इसके बिना ज़ाहिरी घर बना लेने से वह उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। अतः यह शिक्षा है जो हमारी है और यह शिक्षा है जिस पर हम अनुकरण करने का प्रयास करते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

फिर अमन की बातें होती हैं। पहले भी मैं ने वर्णन किया कि मस्जिद का नाम भीदार अमान है अर्थात जहां अमन और संरक्षण मिलता है। इस मस्जिद में जहां इबादत करने वालों को अपने उच्च आचरण का प्रकटन करना होगा वहां प्रत्येक आने वाले के शब्दों में भी और अनुकरण में भी दूसरों के लिए अमन और मुहब्बत और प्यार झलकता हुआ नज़र आए। जब ये होगा तो फिर इन्सानियत की क़द्रें भी क़ायम होंगी values क़ायम होंगी जिनकी ज़माने को आवश्यकता है और आजकल के ज़माने के लिए यह बहुत बड़ी चीज़ है क्योंकि हम प्रत्येक ओर देखते हैं कि संसार में फ़साद फैला हुआ है और इस फ़साद को दूर करने के लिए प्यार और मुहब्बत की आवश्यकता है। और प्यार और मुहब्बत के बाद ही फिर अमन क़ायम होता है। अतः ये दोनों चीज़ें आपस में मिली हुई हैं जिसका प्रकटन हम अहमदी संसार में प्रत्येक जगह करते हैं और इन शा अल्लाह जैसा कि यहां पहले भी करते रहे और आइन्दा भी करेंगे।

शेष आगे ....

★ ★ ★

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (ख़ून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad